बरन संकल्प मासिक समाचार पत्र

RNI No. : JHAHIN / 2014 / 58757 (स्थापित : 1993) फरवरी 2019, वर्ष–5, अंक–3

सम्पादक एवं प्रकाशक बरन संकल्प
सचिव; बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)
बालेश्वर प्रसाद, कस्तुरबा नगर, लुबीं सर्कुलर रोड, धनबाद–826001, ☎ 9431725382, 7717762093

सह–सम्पादक – **डा भुवनेश्वर मोदी**, पतरातु
☎ 9431534443

मुद्रक : बिपिन कुमार चौरसिया
प्रेस : बिपिन प्रिंटींग प्रेस, कतरास रोड, धनबाद, ☎ (0326) 2308009

स्वामित्व : बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)
प्रकाशन स्थान:कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड, धंनबाद 826001 (झारखण्ड) E-mail : baransankalp@gmail.com

बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)

अध्यक्ष : कृष्णचंद्र अशान्त, शिव मंदिर चौक, न्यू कॉलोनी, जगजीवन नगर, धनबाद ☎ 2200243, 9934341558

उपाध्यक्ष : विमल कुमार बरनवाल, खमरिया, (भदोही) ☎ 9794862972, 9415865614

कोषाध्यक्ष : बिशेश्वर प्रसाद, MIG/B-18, हाउसिंग कॉलोनी, धनबाद, मो0 नं0 – 7294032449

विषय सूची

			पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	बालेश्वर प्रसाद	2–3
2.	चुनाव	विनोद कुमार बरनवाल	3
3.	समय चक्र	प्रताप नारायण बरनवाल	3
4.	गीता–सार	डॉ. भुवनेश्वर मोदी	5–8
5.	जिन्दगी की किताब	मंजुला वर्णवाल	8
6.	चल मेरे मन फिर उस पार	सुभद्रा गुप्ता बरनवाल	8
7.	बेचैन जिन्दगी	डॉ. भुवनेश्वर मोदी	9–13
8.	श्रीनिवास रामानुजन		15–24
9.	वर–वधू		25–28
10.	चुनावों के बाद भी	मोहन प्रसाद बरनवाल	31
11.	पुर्ण कुंभ में पुण्य	अरविन्द कु. बरनवाल	32–34
12.	स्वास्थ्य परिचर्चा		35

बरन संकल्प न्यास के न्यासी परिषद के अन्य सदस्य

श्री अनन्त नारायण लाल, धनबाद – 9431377604, श्री पी0 एल0 बरनवाल, धनबाद – 9431187661, श्री विष्णु प्र0 गुप्ता, झरिया – 9431162609, श्री बी0 एल0 बरनवाल, धनबाद – 9431315440, श्री सुनील कश्यप, धनबाद – 9431125696, श्री अमरेन्द्र नारायण, धनबाद – 9835553936, डा0 महेन्द्र प्रसाद, धनबाद – 9431730154, श्री मधुकर प्रसाद, धनबाद – 9334014556, श्री सदानन्द प्र0 बरनवाल, जैना मोड़ – 9430756496, श्री जगदेव प्र0 बरनवाल, जमशेदपुर – 0657–2290174, श्री राधेश जी बरनवाल, मिर्जापुर – 9936119805, श्री ओमनन्दन प्रसाद, धनबाद – 9431191440, श्री अजित कुमार बरनवाल, आसनसोल – 9002726608, श्री महेश्वर मोदी – 9572112499, श्री साधुशरण प्रसाद, 9470570757

शुल्क "बरन संकल्प" के 01910100925352, UCO Bank, IFSC - UCBA0000191 के A/c में जमा करें। न्यासी शुल्क 1200/–

प्रकाशित सभी लेखों एवं नकल कर भेजे गये रचनाओं का उत्तरदायित्व रचयिताओं का है। सभी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र धनबाद होगा। 'बरन–संकल्प' में प्रकाशित रचनाओं के विचार संबंधित रचनाकारों के हैं, 'बरन–संकल्प' के नहीं –सम्पादक

सम्पादकीय

वीरों, विद्वानों और संतों की कोई जाति नहीं होती। ये अपने–अपने आचरण, भुजबल और तपबल से अपनी राह स्वयं बनाते हैं। भक्ति मार्ग पर चलकर जिस दिव्य पुरुष ने परम पद पाया और करोड़ों के पूज्य बने, उनकी भला जाति क्या ?

संसार में अब तक जितने भी मानव पैदा हुए, ईश्वर ने अब तक किसी के भी शरीर में जाति सूचक चिन्ह देकर नहीं भेजा जिससे यह कहा जाय कि अमुक आदमी जन्म जात अमुक जाति का है और अमुक आदमी अमुक जाति का। वस्तुतः भारत में तो यह जातिवाद हम ही मानव जाति के दुर्विचारों की ही देन है। प्राचीन वैदिक या अरण्यकाल में जातिवाद नहीं था। तब केवल वर्ण–व्यवस्था थी जो कर्मो पर आधारित थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र–मात्र ये ही चार वर्ण के थे और अपने–अपने कर्मो के अनुसार ही ये जाने जाते थे। आगे चलकर कर्म ने जाति का रुप लिया। अर्थात् कर्म ने ही जाति प्रथा को जन्म दिया न कि जाति ने कर्म को। देश का यह आज तक बहुत बड़ा दुर्भाग्य रहा है कि ब्राह्मण कहलाने वाले कर्मकाण्डियो ने ही अपने स्वार्थवश जातियों को जन्म दिया और राजाओं (क्षत्रियों) से इसे कठोरतापूर्वक लागू करवाया। वर्ना क्या कारण था कि भरी सभा में अर्जुन से लोहा लेने को तैयार कर्ण से गुरु द्रोणाचार्य उसकी जाति पूछ बैठते। राष्ट्रकवि स्व. श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ने रश्मिरथि में जिस तरह से जातिवाद पर प्रहार किया है, वह सोचनीय है। कर्ण के शब्दों में –

''तन पर शोभे धवल वस्त्र, भीतर का ले के काले।
शर्माते हैं तनिक नहीं ये जाति पूछने वाले।।

और फिर – ''जाति पूछना हो तो फिर पूछो मेरे भुजबल से''।

दुःख की बात यह है कि इस लोकतंत्र के युग में और वह भी भारत में और वह भी कोई और नहीं स्वयं भाजपा के ही यू.पी. के मुख्यमंत्री ''योगी जी'' ने ही श्री श्री हनुमानजी को दलित बता दिया। अगर इसी शब्द का इस्तेमाल कोई काँग्रेसी या मार्क्सवादी या इतर हिन्दू धर्मावलम्बी करता तो शायद भाजपाई ही थू–थू कर देते। पर जब वोट की राजनीति करनी हो तो सारे अपराध माफ। मध्यप्रदेश के दलित मतदाताओं का ध्यान भारतीय जनता पार्टी की ओर मोड़ने के लिए उन्होंने हनुमानजी को दलित तक कह दिया। और दलित हूँ कि उनकी इस चाटुकारी भाषा पर तनिक भी नहीं पिघले और वहां भाजपा मात खा गई। ऐसे में जो होना था सो हुआ। और अब तो यह होने लगा है कि जाट हनुमान जी को जाट तो मुसलमान उन्हें मुसलमान कहने लगे हैं। योगी जी तो खुद जातिवाद के दलदल में तो डुबे ही, हनुमान जी को भी डुबो दिये और हिन्दू समाज को। चलिए, संतोष कीजिए कि राजनीति में सब कुछ क्षम्य है।

फिर भी इतना अवश्य कहूँगा कि जिन्हें थोड़ा भी हिन्दू धर्मशास्त्र का ज्ञान है, उसे अवश्य मालूम होगा कि हनुमान जी ने न तो आज के युग जैसी कभी दलित का काम किये थे और न ही उन्होंने खेती–गृहस्थी की थी और न ही पशुपालन ही किया था। न तो वे मुसलामन घर में पैदा होकर सुन्नत कराये थे और न ही नमाज ही पढ़े थे। फिर वे कैसे दलित, जाट और मुसलमान हो गए ? अपना–अपना मत व्यक्त करने वाले ही जानें। जिनके पिता साक्षात् पवन देव, माँ अंजनि देवी, गुरु साक्षात् सूर्यदेव हैं। उनके विषय में अगर ज्ञान गुण सागर, कपीश, अतुलित बल विक्रम निधान, तिलक मालाधारी, ब्रज समान गदाधारी, कुमति को त्यागकर सुमति अपनाने वाले जग वंदित यहाँ तक ब्राह्मण वेश में देखकर श्रीराम द्वारा वंदित कहा जाय तो ऐसे दिव्य पुरुष वानर रुप में तो साक्षात् ब्रह्म समान माने जा सकते हैं। जो स्वयं कहते हों कि ''रामकाज किये बिनु मोहि कहाँ विश्राम'', क्या वे दलित हो सकते हैं ? जिन्होंने श्रीराम की आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया और लंका विध्वंस तथा राक्षस कुल

संहार में निस्वार्थ भाव से श्रीरामजी का हृदय खोलकर सहयोग किया, यहाँ तक कि श्रीराम के चरणरज पखारकर मस्तक से लगाये और सुग्रीव का मंत्री पद की चाहत छोड़कर श्रीरामजी का द्वारपाल बनना स्वीकार किये। ऐसे सेवक को क्या दलित कहा जाय ? श्री हनुमानजी को दलित बताने वाले 'योगी जी' क्या कभी हनुमान जी बन सकते हैं या सचमुच मोदीजी के हनुमान जी वही हैं ? अगर हैं तो इस वोट के युग में कहीं वे मोदीजी की नैया ही न डुबो दें। मध्यप्रदेश में तो उबार नहीं सके। ऐसा न हो कि देश में भाजपा को ही न ले डुबें। अगर हनुमान भक्त हिन्दू भड़क गए तो भाजपा की सारी मिट्टी ही न पलीत हो जाय। विरोधी तो ऐसा चाह ही रहे हैं और बिन माँगे उन्हें मुराद जो मिल जा रही है। इसलिए योगी जी जैसे भाजपाई सावधान हो जाइए, 2019 का आम चुनाव मुहाने पर खड़ा है। सच मानिए हनुमानजी दलित नहीं वह निवर्ण अर्थात् न तो वह ब्राह्मण थे, न क्षत्रिय, न वैश्य, न दलित बल्कि महामानव, महान देवता, महान भक्त, महानब्रह्मचारी, महान योद्धा और महान देशभक्त थे। सीता–राम के अतिरिक्त उन्हें और किसी का ध्यान कहाँ था ?

जय बजरंगी जय हनुमान,
इस पर कृपा करो दया निधान।
इन्हें सद्बुद्धि करो प्रदान,
अब भी रखे ये धर्म का ध्यान।।

बालेश्वर प्रसाद
सम्पादक

चुनाव

चुनाव का विगुल फिर बजने वाला है फिर वही पुराने भक्ति गाने बजेंगे, वही नेता फिर लम्बे–चौड़े कागज पर बड़े–बड़े वादे छपवा कर हम जनता के बीच में बटवाएँगे, साथ ही जो नेता का दर्शन कभी नहीं होता हैं वे नेता चुनाव के समय अपने लश्कर के साथ हम सबके हर तबके के लोगों के दरवाजे–दरवाजे हाथ जोड़कर जाएँगे और अपने पक्ष में वोट करने के लिए कहेंगे। ओर फिर हम जनता फिर वही गलती कर पाँच साल के लिए गद्दी पर बैठाएँगे कि नेता जी हमने तो बैठा दिया अब आप फिर से हम जनता को लुटना शुरु कर दीजिए, कोई पार्टी का नेता कहता मैं शिक्षा का, व्यापार का विकाश करुँगा तो कोई कहता है मैं मंदिर बनवाऊँगा पर कब ये सब काम करेंगे इसका कोई तारीख निश्चित नहीं होता और हम जनता इंतजार करते रह जाते है और फिर चुनाव आ जाता है।

विनोद कुमार बरनवाल
राज ग्राउण्ड, झरिया

समय चक्र

समय हवा के झोंको जैसा
सहज आता और चला जाता,
मानव मन की गति निराली
प्रबुद्ध है, फिर भी बैठा रह जाता।
इंतजार है उसे शुभ घड़ी की
जो मिलता उसको कभी–कभी
बाकी समय वह बेकार समझता
सोच बना ऐसा प्रायः सभी की।
जीवन घर जो रित रहा है
पर ना समझ की गति निराली,
सोते–जगाते, उठते–बैठते
है दिखती उसको सिर्फ हरियाली।
किन्तु वश में भावना है मनुष्य की
किया जिसने उपयोग बना अविष्कारक,
बाकी लोग अपने भाग्य को पीटते
नहीं कही पर यह कोई फलदायक।

प्रताप नारायण बरनाल
कैंमा शिकोह, पटना सिटी

मोदी बर्णवाल सेवा समिति पतरातू (झारखण्ड)

वार्षिक बैठक, 2018 का लेखा–जोखा

रजिस्ट्रेशन नं. – 0096/12

दिनांक – 02/01/2019

दिनांक 02/01/2019 तद्नुसार बुधवार रात्रि 8.30 बजे पतरातू जिला रामगढ़ के बर्णवाल भवन में मोदी–बर्णवाल सेवा समिति की वार्षिक बैठक श्री भुवनेश्वर मोदी की सभाध्यक्षता में आहूत हुई जिसमें सबसे पहले महाराजा अहिबरण के चित्र पर माल्यार्पण, पूजन एवं प्रसाद वितरण के उपरान्त समिति का लेखा–जोखा श्री अर्जुन प्रसाद बर्णवाल कोषाध्यक्ष सह सचिव द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस बैठक में अध्यक्ष श्री संजय कुमार बर्णवाल के साथ–साथ सर्वश्री महावीर प्रसाद बर्णवाल, प्रयाग प्रसाद बर्णवाल, विजय प्रसाद बर्णवाल, राजन बर्णवाल, लक्ष्मण प्रसाद बर्णवाल, रघुनन्दन प्रसाद बर्णवाल, मनोज कुमार, रवीन्द्र कुमार मोदी, जागेश्वर प्रसाद बर्णवाल, कृष्ण कुमार बर्णवाल, कृष्णा बर्णवाल, रामकृष्ण मोदी, सुरेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, सुनील कुमार बर्णवाल, सहदेव बर्णवाल, मनोज बर्णवाल, महेन्द्र मोदी, राजू प्रसाद बर्णवाल, छोटे लाल बर्णवाल, विकास कुमार, सुरेश प्रसाद बर्णवाल तथा कुछ अन्य सदस्यों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर सर्वसम्मति से निम्नांकित प्रस्ताव पारित किये गये –

1. जनवरी 2019 से सदस्यता शुल्क प्रतिमाह 50/– की जगह 100/– लिये जायेंगे।
2. फरवरी–मार्च के बीच स्वजातीय मिलन समारोह आयोजित करने पर विचार हुआ।
3. इसमें विशद् खर्च के लिए समिति के सदस्यों द्वारा वहन किया जाएगा।
4. प्रतिमाह बैठक में अधिक से अधिक सदस्यों की उपस्थिति पर जोर दिया गया।
5. विगत वर्षो की तरह इस वर्ष भी रामनवमी उत्सव में स्थानीय मेले में समिति की ओर से गुड़–चना–शर्बत के वितरण की व्यवस्था की जाय।

ह0 सभाध्यक्ष
भुवनेश्वर मोदी
ब्लॉक मोड़, पतरातू

वार्षिक आय–व्यय विवरण 02/01/2019

02/01/2019 का शेष –	294941/–	02/01/2019 –		1190/–
सदस्यता शुल्क से प्राप्त –	18600/–	कमिटि में लगा –		31900/–
सदस्यता ब्याज से प्राप्त –	19300/–	जमीन बाउन्ड्री खर्च		51405/–
बैंक से ब्याज प्राप्त –	1558/–	एस.एम.एस.	18/–	
	1504/–	एक्स्ट्रा कोष.	1501+2400/–	
	1273/–	कुल		2568/–
कुल	337226/–	कुल खर्च		87063/–

शेष बचा – 250163/–

बढ़ती B.O.I. से – 346/–

कुल – 250559/–

01/01/2019 तक शेष बचा है B.O.I. में – 250559/–

ह0 अध्यक्ष महोदय द्वारा लेखा–जोखा देखा सही पाया अपना हस्ताक्षर किए। ह0

सचिव सह कोषाध्यक्ष
अर्जुन प्र. बर्णवाल, स्टेशन रोड, पतरातू

अध्यक्ष
संजय कु. बर्णवाल, ब्लॉक मोड़ पतरातु

गीता-सार

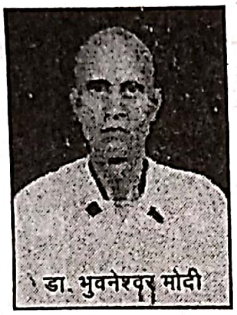

अष्टदश अध्याय
मोक्ष सन्यास योग

गतांक से आगे .....

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि में'' ।।65।।

अर्थात् हे अर्जुन ! तुम मुझमें चित्त लगाकर मेरा भक्त बन जा। मेरा ही पूजन कर, मुझे ही प्रणाम कर। इसी मार्ग पर चलकर तुम मुझे प्राप्त कर सकोगे। इसे मेरी सत्य प्रतिज्ञा समझ। क्योंकि तुम मेरा अतिशय प्रिय भक्त हो। भगवान कितना भक्त वत्सल हैं, विशेष कर अर्जुन के प्रति वे स्वयं अपने मुख से अपनी ही पूजा और प्रणाम करने के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं। क्या कहीं और कभी भगवान ने अर्जुन के अतिरिक्त किसी भक्त को अपनी पूजा और प्रणाम करने के लिए कहा है ? ऐसा उदाहरण बिरले ही मिलता है। भगवान कभी भी अपने भक्त को ऐसा करने को नहीं कहते। बल्कि भक्त स्वयं भक्ति भाव से प्रेरित होकर भगवान की भक्ति पूजा और प्रणाम करता है। पर यहाँ तो भगवान स्वयं अर्जुन से ऐसा करने को कह रहे हैं। यही नहीं, वे यहाँ तक कह देते है कि–

''सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेक शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः'' ।।66।।

अर्थात् अर्जुन को यह कहकर विश्वास दिलाते हैं कि अपने सारे धर्मो (सारे कर्त्तव्यों) को त्यागकर मात्र मेरी शरण में आ जाओ। मैं तुम्हें सारे पापों से मुक्त कर दूँगा, तू चिन्ता मत कर। भक्त को इससे बढ़कर भगवान से भला और क्या चाहिए ? बिन माँगे भगवान अपने भक्त (अर्जुन) को सब कुछ दे रहे हैं। और भक्त हैं जो पाप के भय से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं।

महाभारत के वन पर्व में श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से मिलने के क्रम में उन्हें दुःख में देखकर अर्जुन ने कहा था–

''ममैव त्वं तवैवाहं ये मदीयास्त वैव ते।
यस्त्वां द्वेष्टि स मां द्वेष्टि यस्त्वामनु स मामनु''।।

अर्थात् हे अर्जुन ! तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूँ। जो मेरे हैं, वे तुम्हारे ही है, अर्थात् जो कुछ मेरा है, उस पर तुम्हारा अधिकार है। जो तुमसे शत्रुता रखता है, वह मेरा शत्रु है और जो तुम्हारा अनुवर्त्ती (साथ देनेवाला) है, वह मेरा भी है। (गीता तत्व विवेचनी टीका, अठ्ठारवाँ अध्याय, फूट प्रिंट, पृष्ठ संख्या 655)। साथ ही श्रीकृष्ण अर्जुन को सावधान करते हुए यह भी जता जाते हैं कि गीता का यह रहस्यमय उपदेश हर समय या हर काल में न तो सब को सुनाने की चीज है और न ही भक्ति विमुख व्यक्ति को या न ही सुनने की इच्छा रखनेवाले को ही सुनाने की चीज है। यहाँ तक कि जो भगवान में ही दोष ढूँढ़ता है, उसे भी सुनाने की चीज नहीं है। अर्थात् जो तप रहित है, भक्ति रहित है, इच्छा रहित हैं और दोष दृष्टि से भगवान को देखता है, वैसे अधम व्यक्ति को गीता के गोपनीय या रहस्यमयी उपदेश सुनाने की आवश्यकता नहीं होती है। क्योंकि इससे गीता का अपमान होता है और जब गीता का अपमान होता है तो समझ लीजिए कि ऐसा करने से भगवान का ही अपमान होता है। भगवान का अपमान का अर्थ है सर्वस्व का अपमान। फिर तो इसके सुफल की कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

इसके बावजूद भगवान अर्जुन से कहते हैं कि जो मेरा परम भक्त बनकर इस गीता को मेरे भक्तों को सुनाएगा, वह मुझे ही प्राप्त होगा। तात्पर्य यह है कि इस उपदेशक वाणी के सुननेवालों को होने वाला पुण्य भी मुझे ही प्राप्त होगा, अर्थात् इससे भगवान का चित्त प्रसन्न होगा और उसके पुण्य का भागी सुनने–सुनाने वाले दोनों होंगे।

भगवान तो यहाँ तक कहते हैं कि गीता सुनना और सुनाना तो उनका अति प्रिय कार्य है। अर्थात् वक्ता और श्रोता दोनों भगवान को अतिशय प्रिय हैं और भविष्य

में भी रहेंगे। यहाँ तक कि गीता शास्त्र को पढ़ने या पाठ करनेवाला व्यक्ति तो ज्ञान यज्ञ से पूजित माना जाएगा। पर जो अनपढ़ हैं या 'गीता' पढ़ने में असमर्थ है, पर श्रवण कर सकते हैं, वे भी पुण्य के भागी होते हैं, पाप से मुक्त हो जाते हैं और उत्तम कर्म करने से मृत्योपरान्त श्रेष्ठ लोक को प्राप्त करते हैं –

''श्रद्धावानसूयश्च श्रृणुयादपि यो नरः।
सोऽपिमुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुतात्पुण्य कर्मणाम्'' ।।71।।

पर भक्त वत्सल दयालु भगवान श्रीकृष्ण जो अपने परम भक्त अर्जुन को बिना संतुष्ट किये चैन से रहने वाले नहीं है, उन्हें बार–बार जिज्ञासा होती है कि उनका भक्त गीता का एकाग्रचित्त होकर श्रवण किया या नहीं और उसके मन में छाया अज्ञानता भरा मोह दूर हुआ या नहीं। इसीलिए वे हृदय में प्यार भरकर अर्जुन को पार्थ तथा धनंजय कहकर संबोधित करते हैं। इस पर अर्जुन भगवान से अति विनम्र भाव से कहते हैं –

''नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्तिोस्मि गत सन्देहः करिष्यसे वचं तव'' ।।73।।

अर्थात् हे अच्युत ! मेरा अज्ञान भरा मोह नष्ट हो गया है और दिव्य ज्ञान से अन्तःकरण भर गया है। अर्थात् आपके द्वारा दिये गए ज्ञान से मेरा हृदय प्रकाशित हो रहा है। मेरे मन के सारे संशय मिट चुके हैं और अब मैं आपकी आज्ञा से युद्धादि सारे कर्म करने को तैयार हूँ। इसके बाद संजय महाराज धृतराष्ट्र से कहते हैं –

''इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः।
संवादमिमम श्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम्''।।

अर्थात् (हे महाराज !) इस प्रकार मैंने भगवान श्री वासुदेव और महात्मा अर्जुन दोनों के अद्भूत, अलौकिक, असाधारण, आश्चर्यजनक और विलक्षण संवाद को जो रहस्यों से भरा और रोमांचक था, सुना। यह संवाद मुझे महर्षि व्यास की कृपा से दिव्य दृष्टि मिलने के कारण ही संभव हो पाया है जो अत्यंत गोपनीय है और जिसे स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं अर्जुन को सुनाया है। अर्थात् गीता को सुनना, जानना और धृतराष्ट्र को संजय द्वारा सुनाया जाना भी महर्षि व्यास द्वारा प्रदत्त दिव्य दृष्टि का फल था जो भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से ही संभव हो सकता था। क्योंकि महर्षि व्यास भी श्रीकृष्ण के अनन्य भक्तों में से एक थे और उनका इस धराधाम पर पदार्पण उन्हीं के अंश से हुआ था।

इस 'गीता' की अमृतमय वाणी को सुनकर महात्मा संजय को किस प्रकार का सुख प्राप्त हुआ, इस पर वे स्वयं कहते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को यह रहस्यमय कल्याणकारी अद्भूत संवाद के बार–बार स्मरण करने से अपार हर्ष हो रहा था। इतना ही नहीं, भगवान श्रीकृष्ण के उस अलौकिक रुप के बार–बार स्मरण करने से भी चित्त में अत्यंत आनंद की ज्योति जल रही थी जिससे भी उनका मन बार–बार आनन्दित हो रहा था। अंत में धनंजय अत्यंत निश्चयात्मक भाव से महाराज धृतराष्ट्र से कहते हैं कि हे राजन् ! जहाँ योगीराज श्रीकृष्ण और गाण्डीवधारी अर्जुन है वहीं श्री (लक्ष्मी) विजय, ऐश्वर्य (विभूति) और अचल सत्य है, ऐसा मेरा मत है –

''यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिमम'' ।।78।।

'गीता' के इस अंतिम श्लोक से ऐसा प्रतीत होता है कि एक तरह से संजय ने महाराज धृतराष्ट्र को महाभारत युद्ध के भावी परिणाम के विषय में पूर्व ही सूचना दे दी थी। ताकि अब भी वे अपने पुत्रों को खासकर दुर्योधन को समझाकर उस महाविनाश से बचा सकें। पर जन्मान्ध और मोहान्ध धृतराष्ट्र पर उनके उपदेशों का बिल्कुल प्रभाव नहीं पड़ा और जो भावी था वह होकर ही रहा। काश ! धृतराष्ट्र को इतनी भी समझ आ गई होती कि –

''यतः सत्यं यतो धर्मो यतो ह्रीरार्जवं यतः।
ततो भवति गोविन्दो यतः कृष्ण स्ततो जयः''।।

''अर्थात् जहाँ सत्य है जहाँ धर्म है, जहाँ ईश्वर विरोधी कार्य में लज्जा है और जहाँ हृदय की सरलता होती है, वहीं श्रीकृष्ण रहते हैं, और जहाँ श्रीकृष्ण रहते हैं, वहीं निःसंदेह विजय है''। गीता तत्व विवेचनी, पृष्ठ सं. 382

''तथा ये च कृष्णं प्रपद्यन्ते ते न मुह्यन्ति मानवाः।
भये महति मग्नांश्च पाति नित्यं जनार्दनः''।।
(महा. भीष्म. 67/24)

अर्थात् ''जो लोग भगवान श्रीकृष्ण की शरण में चले जाते हैं, वे कभी मोह को प्राप्त नहीं होते। महान भय (संकट) में डूबे हुए लोगों को भी भगवान जनार्दन नित्य रक्षा करते है''। गीता तत्व विवेचनी, पृष्ठ सं. 400।

अंतिम निवेदन

स्वामी सारदानन्द इस बात को स्वीकार करते हैं कि औषधि, राजनीति और धर्म के माँ–बाप नहीं होते हैं। समय आने पर सभी को आप ही आप इनका ज्ञान होने लगता है, प्रयास पूर्वक इनकी शिक्षा नहीं लेनी पड़ती। इन तीनों विषयों के संबंध में कहीं पर यदि कोई प्रश्न उपस्थित होता है तो वहाँ उपस्थित सभी व्यक्ति उसकी मीमांसा करने के लिए अधीर हो उठते हैं। वर्त्तमान में देश–विदेश में कुछ ऐसी ही परिस्थिति रोज बन–बिगड़ रही है। कभी–कभी ऐसा लगता है कि बारुद की ढेर पर बैठा विश्व पता नहीं कब विस्फोट कर जाय और एक पल में सारी सृष्टि का विनाश हो जाय, कहा नहीं जा सकता। पर लोकतांत्रिक माध्यम से जब सत्ता परिवर्त्तित होते अपनी आँखों से देखता हूँ तो इस अविश्वासी युग में सत्य–किरण चमकती चमचमाती दृष्टिगोचर होती है। तभी आत्मा कहती है कि भारत जैसे धर्म प्रधान देश में जहाँ मानवता आज भी जिन्दा है, विनाशकारी शक्तियाँ यहाँ कभी विजय प्राप्त नहीं कर सकती। शास्त्र छोड़कर शस्त्र की लड़ाई लड़नेवाले अपना विनाश खुद ढूँढ़ ले रहे हैं। क्योंकि वे कर्म विमुख होकर उत्तरदायित्व से भाग खड़े होते हैं और अल्प परिश्रम से स्थायी सुख चाहते हैं। परन्तु उन्हें मिलता है सिर्फ क्षणिक सुख और अन्ततः वे अपना अन्त कर बैठते हैं। ऐसे सुखापेक्षी धन लोलुपों एवं भोगियों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि वे गीता के मर्म को समझकर पहले कर्म योगी बनकर अर्जुन जैसे महापुरुष से जीवन में संघर्ष करना सीखें। पहले अपने आप को बनावें बाद में पावें वाला सिद्धान्त ही उन्हें सच्चा सुख दे सकेगा। यहाँ मैं स्वामी सारदानन्दजी की कुछ महत्वपूर्ण पंक्तियाँ ज्यों की त्यों उपस्थित करना चाहूँगा। कृपया इस पर पाठक ध्यान दें –

''वेद का अर्थ है ज्ञान–भगवान का अनन्त ज्ञान जो कि उनके साथ अन्त काल से चला आ रहा है। इसलिए हमारे शास्त्र में वेद को अनादि कहा गया है।

'गीतादि शास्त्रों में भी हम देखते है कि भगवान कह रहे हैं कि – जगत उनका ही एक अंश मात्र है। सृष्टि जब अनादि ठहरी तब फिर इस विषमता का कारण क्या है ? शास्त्र का कथन है कि इसका कारण कर्म है। अतः कर्म भी अनादि है। सभी को कर्म करना पड़ता है। कर्म किये बिना कोई भी नहीं रह सकता। कर्म के साथ उसका फल भी नित्य सम्बद्ध है। कर्म करने से उसका फल अवश्य ही भोगना पड़ेगा। तो फिर मुक्ति किस प्रकार से संभव हो सकती है ? निस्वार्थ होकर निष्काम भाव से कर्मानुष्ठान करने से कर्म फल के साथ लिप्त होना नहीं पड़ता, और पूर्ण निःस्वार्थता ही समग्र बन्धन को दूर कर देती है।

इसी को कर्म योग कहते हैं। यदि एक शब्द में कहना हो तो यही कहना पड़ेगा कि निःस्वार्थ बनना ही यथार्थ में धर्म है। चाहे कर्म योगी हो या भक्तियोगी अथवा ज्ञानयोगी, सभी लोग निःस्वार्थ बनने के लिए प्रयत्नशील है।

कर्म में कोई दोष नहीं है। हमारे मन में भाव या उद्देश्य को लेकर ही कर्म की भलाई–बुराई है। हम जिस भावना को लेकर कर्म का अनुष्ठान करते हैं, उसी भावना के अनुसार हमारा वह कर्म हमें उन्नत या अवनत बनाकर भले–बुरे के रुप में प्रतीत होने लगता है।

''इसीलिए शास्त्र कथन है कि भगवान की अनन्त शक्तियाँ सबके अन्दर निहित है। उनसे ही हम अपनी–अपनी शक्ति का ग्रहण तथा विकास कर रहे हैं। इस शक्ति का अपव्यय न कर ऊँचे से ऊँचे कार्य में यदि हम उसे नियुक्ति कर सकें तो अवश्य ही हम जीवन के महान लक्ष्य पर पहुँच सकेंगे। वही पृ. संख्या 162

अस्तु,

हे सर्वदानन्द शक्तिमान, पूर्ण ब्रह्मा अजन्मा अमर,
हे अनन्त न्यायकारी प्रभु जी, सर्व व्यापक दयामय ईश्वर!
आपकी महिमा अपरंपार है, आपके शुभ नाम अनन्त,
बड़े–बड़े ऋषि मुनि देवादि, पार न पा सके भगवंत।।

मैं तो मूढ़ अज्ञानी प्रभु जी, ज्ञान तुम्हारा अपरंपार।
गूँगे को वाचाल तू करता, निर्वल को बल देता अपार।।
लंगड़ा, फाँद लेता पर्वत को, अयोग्य योग्यता पर लेता।
यदि कृपा हो तो तेरी महाप्रभु, असंभव भी संभव होता।।
मुझे भी तुम इस योग्य बनाओ, सदा तुम्हारा ध्यान रहे।
पाप–पुण्य का भेद मिटाकर कर्मो में नित्य ध्यान रहे।
कर्म योगी बनकर प्रभुजी कर्म पथ पर बढ़ता रहूँ।
''कर्म ही प्रभु का नाम है'' – बस यही सोचकर करता रहूँ।।

ओऽम् शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

डॉ. भुवनेश्वर मोदी
मोदी भवन, ब्लॉक मोड़
पतरातू, जिला – रामगढ़

''जिन्दगी की किताब''

जिंदगी की किताब, है बड़ी निराली।
सुख है तो अमृत की प्याली।
गम है तो गरल थाली।
खुशियों की चाँदनी से, आलोकित मन रहा है।
दुख के घुमड़ते बादलों को, होठ गुनगुना रहा है।
सागर उमड़ता प्यार का, लहरें हैं मचल जाती।
टकरा कर चट्टानों से, है लौट–लौट जाती।
जब वक्त स्वर्णिम आता, जीवन है जगमगाता।
परिजात पुष्पों से, कायनात महक जाता।
सुधा की बरसा से, सराबोर बदन रहता।
सपनों के मन का पंछी, नभ में है विचरण करता।
उमंगों के सोपानों पर, पग खुद बखुद उठ जाते।
मंजिल की अटारी चढ़ कर, खुद ठिठक जाते।
पर वक्त की आँधी कभी, अब तक है किसे छोड़ा,
मझधार में डगमगाती नैया, माँझी भी पार न पाता।
वर्त्तमान जीवन भी कभी, इतिहास है बन जाता।
यादों का भँवर बन कर, लोगों को मन लुभाता।
बीता समय कभी भी, है लौट कर नहीं आता।
सास्वत सत्य यही है जग का, पर समझ नहीं कोई पाता।

मंजुला वर्णवाल, बैंगलौर

''चल मेरे मन, फिर उस पार''

चल मेरे मन फिर उस पार !
जहां हौसलों की उड़ान हो
आशाओं का नव बिहान हो
इंद्रधनूषी रंग बिखेरे रहता हो कोई सृजनहार !
चल मेरे मन ! फिर उस पार !
जहां न हो दुविधाएं कोई !
मन पर ना कोई पहरा हो
जहां न हो अस्तित्व का जोखिम !
प्रेम समर्पण गहरा हो !
उन्मुक्त गगन में पंख फैलाये
उड़ने की आजादी हो
अपनेपन की महक लिये
जीवन में खुशियां आती हो
जहां क्षितिज के संग मिले
ये धरती होकर एकाकार !
चल मेरे मन फिर उस पार
जब चारों ओर हो घुप्प अंधेरा
जब चारों ओर उदासी हो
जब जीवन की झंझावातों में
कोई राह समझ न आती हो
तब थोड़ी सी उजास फैलाती
एक दीये की है दरकार !
चल मेरे मन फिर उस पार !
चल मेरे मन फिर उस पार !

सुभद्रा गुप्ता बरनवाल
मोती सोप, झरिया

सुख–दुःख

दुनिया है यह बहुत बड़ी,
व इसमें सुख–दुःख दोनों है भरी,
पार करोगे जब तुम यह सारे दुःख,
तब अनुभव करोगे अपार सुख।

आदित्य बरनवाल, उम्र–12 वर्ष

उपन्यास

बेचैन जिन्दगी

भाग – 13

प्रिय पाठकों !

इस उपन्यास के पिछले भाग में आप सभी पाठकों को बताया था कि त्रिभुवन साहू के छोटे दामाद श्यामसुन्दर प्रसाद ने किस तरह से निन्दनीय चाल चलकर उन्हें गृह–त्याग करने को विवश कर दिया था। इस खूट चाल में भले ही उसकी मंशा स्पष्ट रुप से झलक रही थी, पर सविता (पत्नी) को मिलाकर किस तरह सास को उसने बरगलाया और फिर उसकी विवशता का अनुचित लाभ उठाने के लिए पहले तो उसके आभूषण चुपके–चुपमे उड़ा लिए और बाद में श्वसुर के मकान को किसी भी तरीके से बेचने पर, उतारु हो गया। इसके बाद फिर क्या हुआ, पहले इसकी जानकारी प्राप्त करे इसके बाद मैं त्रिभुवन बाबू की चर्चा करुँगा।

एक दिन साहूजी का बड़ा लड़का पन्नालाल संयोगवश अपने पैतृक मकान के सामने से गुजर रहा था। लगभग एक–डेढ़ वर्ष के बाद उसने उस रास्ते पर कदम रखा था। चलते–चलते उसकी जो मकान पर नजर पड़ी तो दंग रह गया। घर के सामने गन्दगी का अपार ढेर और बकरी की लीद। साथ ही गेट में लटका हुआ ताला। उसी के साथ एक मकान बिक्री की सूचना भी। उसमें मोबाइल न. देखा तो संपर्क साधा। फिर प्रोपर्टी डीलर से सम्पर्क साधा और जानकारी हासिल की। उसे पता चल गया कि इस मकान की बिक्री के पीछे उसी के बहनोई श्याम सुन्दर का हाथ है। ये सारी बातें मैं भाग 12 में उद्धत कर चुका हूँ। अब पन्नालाल का क्रोध पैर से मस्तक पर जा पहुँचा। उसने इसके लिए श्यामसुन्दर की गर्दन धरने की योजना बनाई। उसके छोटे भाई आजाद से मिला और एक दिन मोटर साइकिल से दोनों उसके दरवाजे पर जा पहुँचे। उनकी पहली भेंट माँ से ही हुई। शरीर पर गन्दे कपड़े, बाल उलझे और झोटियाये हुए, आँख–मुँह भूख के मारे धँस चुके थे। मुँह इस प्रकार विकृत हो गया था कि पहचान में नहीं आ रही थी कि यह वही सोनमती देवी चार बेटे–बेटियों की माँ। समय ने उसे कहाँ से लाकर कहाँ पटक दिया था। दोनों बेटों को देखते हुए मुँह ढककर फफक–फफक कर रोने लगी। पूरा–पूरा सच नहीं बता पाई। सच का सामना करने की उसमें हिम्मत नहीं रह गई थी। उसने सिर्फ इतना ही कहा – ''तुम्हरे पापा मुझसे झगड़ा करके घर से निकल गये। मुझे महीना भर भूखे–प्यासे तड़प–तड़प कर रहना पड़ा। भूख की मारी मैं दोनों बाला बेच कर किसी तरह अन्न पानी की व्यवस्था कर पाई। तुम दोनों इस प्रकार मुँह फेर लिया कि पलटकर हाल–चाल लेना भी मुनासीब नहीं समझा। मेरा रो–रो कर हाल बेहाल था। ऐसे में कोई उपाय न देख मैंने सविता को फोन किया। फिर बहुत खुशामद के बाद तेरे छोटे बहनोई जाकर सामान के साथ ले आए और घर में ताला लग गया। फिर धीरे से फुसफुसा कर बोली – ''बक्सा का ताला खोलकर चुपके से मेरे सारे जेवरात छोटे बाबू निकालकर गायब कर दिये हैं। पापाजी के मकान का कागज एक कागज में लिपटा हुआ उनका हैण्डनोट भी था सो सब ले लिए हैं और अब मकान बेचने का दबाव डाल रहे हैं। मैं इसके लिए तैयार नहीं हुई तो दोनों जन मुझे दिन–रात सता रहे हैं। न तो ठीक से खाने–पीने दे रहे हैं और न ही चैन की नींद सोने दे रहे हैं। मैं क्या करुँ, कहाँ जाऊँ समझ में नहीं आता।''

सुनकर दोनों भाई आग बबूला हो गये। सुन– सुनकर सविता किवाड़ की ओट में दम साधे रही। वह बाहर निकल कर माँ को टोकना नहीं चाहती थी। घर में अकेली थी और उसके दोनों बच्चे स्कूल गए थे। शायद बाहर आती तो भाइयों के क्रोधाग्नि में वही झुलस जाती। उस दिन का संयोग देखिए, कि अभी माँ बेटों में भेंट हुए दस मिनट भी नहीं हुए थे कि श्याम सुन्दर ने नशे में बड़बड़ाते घर में कदम

रखा। पन्नालाल ने आव देखा न ताव। उसने लपककर उसका हाथ पकड़ा और पूछा – ''तुमने माँ का आभूषण चुराया है ?''

श्याम सुन्दर – ''तुम पूछने वाला कौन हैं रे ? मैं चोर हूँ क्या ?''

पन्नालाल – ''तुम सच–सच बताते हो या ऊपर से घूसे दूँ ?''

श्याम सुन्दर – ''तुम मुझे घूसे मारोगे तो मैं भी मारुँगा ?''

पन्नालाल – ''(घुसा तानते हुए) ऊपर से दूँ या बताओगे ?''

श्यामसुन्दर – ''हाँ मैंने सारे जेवर बेच दिए हैं ?''

पन्नालाल – ''और अब घर का कागज और हैण्ड नोट चुराकर भी मकान बेचना चाह रहे हो ?

श्यामसुन्दर – (थोड़ा संभलकर) ''नहीं बेचूँगा तो तेरे बाप का कौन नौकर है जो इस बुढ़िया को खिलाएगा– पिलाएगा और रखेगा ?''

इस पर आजाद ने कहा – ''तुम सारे कागजात देते हो कि अब मैं ऊपर से दूँ ?''

पन्नालाल – ''आजाद यह नहीं मानेगा। इसको पटको और सीने पर चढ़ो तभी रास्ते पर यह साला आएगा।'' इतना कहते ही आजाद ने उसे ऐसा ठोकर दिया कि वह औधे मुँह जमीन सूँघने लगा। फिर तो दोनों भाइयों ने लातम–जूतम शुरु किया तो बचाओ–बचाओ का शोर मचाने लगा। सविता से अब छुपकर नहीं रहा गया और वह दौड़कर दोनों भाइयों के पैरों पर जा पड़ी। उसने घिघियाते हुए कहा – ''भैया मैं पाँव पड़ती हूँ, कसम खाती हूँ। मैं अभी लाकर सारे कागज़ात दे देती हूँ।''

कहा जाता है कि मार के डर से भूत भागता है। दो चार घूसे में ही श्याम सुन्दर के भूत दिमाग से उतर चुके थे। सविता ने चुपचाप अपना बक्सा खोला और पूरा फाइल ही उन दोनों के सामने लाकर पटक दी। फिर बोली – ''देख लो, सारे कागज इसी में हैं। इन्हें ले लो और माँ को भी साथ में ले जाओ। मैं इसे अब नहीं रखूँगी। दोनों भाइयों ने फाइल खोलकर सारे कागज़ात उलट कर देखे। रजिस्ट्री पेपर, रसीद और पापाजी का हैण्डनोट जिसमें सोनमती देवी को मकान की मालिकगिरी अधिकृत किया गया था। दोनों को गहरे खड्डे में पड़ा खजाना हाथ लगा। फिर क्यों वे वहाँ रुकते। बिना कुछ बोले, बिना माँ से कोई बात किये दोनों मोटर साइकिल से उड़न छू हो गए। सोनमती देवी उन्हें निहारती रह गई। ये दोनों स्वार्थी बेटे इस प्रकार उससे मुँह फेर लेंगे, इसकी उमीद उसे तनिक भी नहीं थी। माँ की सारी दुर्दशा जानकर उन्हें तनिक भी दया नहीं आयी। शायद उन्हें ऐसा विश्वास हो गया था कि माँ की करनी का फल ही उसे भोगना पड़ रहा है। बिना पत्नी से परामर्श लिये उनमें इतनी हिम्मत कहाँ कि वे माँ पर तरस खावें। सम्पत्ति के भूखे बेटे कलयुगिया बेटे सही में साबित हो चुके थे। हाय रे जमाना, तुमने किसी को माफ़ करना नहीं जाना।

वापस जाकर दोनों भाइयों ने आपसी समझौते से पहले तो मकान का ताला तोड़े। इसकी जो स्थिति देखी, उसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। आँगन में शीलन, जगह–जगह घास फूस, छत पर जमे कीचड़ का अब भी निशान। कबूतरों के घोंसले और बीट। मुँडेर पर कई जगह जनमें पीपल और नीम के पौधे। घर की नाली जाम, मकड़े के जाले और मच्छरों की हुनहुनाहट अलग से। पहले तो दोनों भाइयों ने मिलकर साफ–सफाई करवाई। फिर बीच आँगन में दीवार देकर पहले का दरवाजा बन्द कर अलग–अलग दरवाजे खोलवाये और फिर अपने–अपने हिस्से के मकान भाड़े पर लगा दिये। बाप कहाँ और किस स्थिति में है, किसी को कोई मतलब नहीं। दोनों की देवियाँ अपना–अपना हिस्सा पाकर फूले नहीं समायी। यह मेरा, यह तेरा। दोनों भाई हिस्सेदार हो गए और दोनों की देवियाँ अलग–अलग हिस्से की मालकिन।

उधर जिस दिन पन्नालाल और आजाद ने आकर श्यामसुन्दर पर हाथ साफ किया और पेपर ले उड़े, उसके एक घंटे के अन्दर ही सोनमतिया देवी को विपत्ति के बादल ने आ घेरा। नैन तो पहले से ही रिमझिम बरस रहे थे, अब मूसलाधार वृष्टि शुरु हो गई। श्याम सुन्दर का नशा फट चुका था और उसके होश ठिकाने आ गए थे। वह झपटकर उठा और बूढ़ी सास को घसीटकर बाहर कर दिया। वह रोती–चिल्लाती रही, दुहाई देती रही, पर कुछ न सुना। बेचारी बाहर आकर बिलख–बिलख कर रोने लगी – अब जाय तो कहाँ जाय ? कोई ठौर नहीं, कोई ठिकाना नहीं। इधर शाम भी ढल चुकी थी। उस अंधेरे गली में इक्के दुक्के लोग ही आ जा रहे थे जिन्होंने इस ओर ध्यान देना उचित नहीं समझा। सविता ने भी इस तरह मुँह फेर लिया था मानों सोनमतिया देवी की कोख से वह पैदा ही नहीं हुई थी। ऐसा व्यवहार तो सौतेली माँ के साथ भी लोग नहीं करते हैं। यहाँ नारी ही नारी का शत्रु बन बैठी थी। पहले तो वह दरवाजे पर बैठकर बहुत देर तक रोती रही। जब किसी का दिल नहीं पसीजा तो वह बस इतना ही कहकर उठी – ''सविता ! आज मैं तुम्हें शाप देती हूँ जिस तरह तुम मुझे, भिखारिन बनाकर छोड़ी है, भगवान तुम्हें भी एक दिन ऐसा ही दण्ड देगा।'' इसके बाद वह धीरे–धीरे चलकर एक प्राइमरी स्कूल के खुले बरामदे में शरण ली। रात की ठंड उसे बर्दाश्त नहीं हो रही थी। विपत्ति काल में निष्ठुरता भगवान भी दिखाना नहीं छोड़ते। आज उसे एहसास हो रहा था कि जीवन का सच्चा साथी गिर बिछुड़ जाय तो फिर शरण दाता दुनिया में बहुत कम मिलते हैं। किसी तरह रात कटी। सुबह के पाँच बजे होंगे कि मुल्ला ने अल्लाहो अकबर की हाँक लगायी। अब एहसास हो गया कि पौ फटनेवाला है। पखेरु भी जगकर भगवान का अभिनन्दन करने लगे। कुछ देर के बाद बाल अरुण ने प्रभाती माँ के गर्भ से जन्म लिया तो सोनमती देवी ने उस दिन का ख्याल किया। ठीक इसी समय आज से लगभग पच्चीस–तीस वर्ष पूर्व उन्होंने सविता को जन्म दिया था। सूर्य देव तो नित नूतन शरीर को धारण कर संसार को आलोकित एवं पोषित करते हैं। तब फिर मनुष्य इतना क्यों कृतघ्न हो जाता है जो अपनी जननी के सथ भी शत्रु जैसा व्यवहार कर बैठता है। वह बुझे मनसे कदम बढ़ाते अनजान पथ पर बढ़ चली। न तो किसी से राह पूछती और न ही मन में अब इच्छा या उद्देश्य रह गया था। मृत्यु भी ऐसे में आ जाय तो उसका स्वागत है। पर वह निर्दयी अपना प्रतिशोध चुकाकर ही आती है। घण्टाभर पैदल चलकर वह बस स्टैण्ड पर आ पहुँची। अब हाथ पसाने और पेट भरने से नाता रह गया था। त्रिभुवन बाबू ने चलते समय जो कहा था, आज वह सच साबित हो गया – ''तुम एक दिन अवश्य भीख माँगोगी।'' उनका अनुमान कितना सटीक और संतुलित था।'' काश सोनमतिया देवी उस दिन सचेत हो गई रहती तो यह दिन उन्हें देखना न पड़ता।

अपने साले की बेटी निर्मला के यहाँ जब से आकर त्रिभुवन बाबू ने आश्रय लिया तब से उन्हें किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं हो रहा था। बल्कि कहिए कि एक तरह से निर्मला के लिए वह वरदान ही साबित हुए। वे उसका अभिभावकत्व बखूबी निभा रहे थे और उसकी हर आवश्यकता का ध्यान रख रहे थे। समय आते–जाते देर नहीं लगती है। इसी क्रम में लगभग पाँच वर्ष गुजर गये। मान–आदर और सेवा ने एक तरह से उनका तनाव दूर ही कर दिया था। पर रात होते ही उनका ध्यान बँट जाता। खा–पीकर जैसे ही वे बिस्तर पर जाते, घूम–फिरकर उनका ध्यान घर पर ही चला जाता। और सबसे अधिक शूल की तरह उन्हें चुभन होता पत्नी का कटु व्यवहार। वैवाहिक जीवन से गृह–त्याग तक की एक–एक घटना चलचित्र की तरह उनके मानस पटल पर उभरती रहती।'' जिस आदमी ने बचपन से कष्ट उठाया हो, भाई भतीजों के डण्डे खाए हों, खून की धारा बहायी हो, उसी के साथ इस तरह का कटु व्यवहार, कभी सोचा नहीं था। सोनमती देवी को कभी कड़ी बात

नहीं कही। कभी मान–सम्मान में कमी नहीं रखी। हर काम की जानकारी और परामर्श लिया। इसके बावजूद मेरे पर ही उल्टे अविश्वास करती गयी। पराये घर गई बेटी ही उसकी सर्वश्व हो गई और मैं दूध का मक्खी। जिन्दगीं की सारी कमाई खाक में मिल गई। एक–एक पैसा जोड़कर, कर्ज ले–लेकर एक–एक ईट जोड़कर मकान बनाया ताकि बुढ़ापे का आसियाना रहे, उजड़े नहीं। फिर भी इस ओर उसका ध्यान नहीं। उसके कटु व्यवहार से ही घर द्वार उजड़ गया, बेटे–बहु, पोते–पोती सब पराये हो गये। मैंने यह दु:ख भी सहा मात्र यह मानकर कि ये बेटे नहीं पखेरु थे जो पर निकलते ही घोंसले से भाग खड़े हुए। पर बसेरा तो अपना था, पत्नी तो अपनी थी। मैं चाहकर भी गृह–त्यागी नहीं बन सका। वर्ना क्या मुझ जैसे अभागे को इतनी लम्बी–चौड़ी दुनिया में दो गज जमीन नहीं मिलती ? जहां रहता वही राम भजन गाता। पेट से ही तो नाता रह गया था। क्या सरकार मुझे इतना भी नहीं दे रही थी। पर पता नहीं बेटी–दामाद ने कौन–सा मंत्र मार दिये कि उसने मुझसे मुँह फेर लिया। खैर अब जो हो, निर्मला रखे या लाठी पकड़ते ही निकाल दे, अब तो इसका धर्म जाने। मैं तो अब इस पर विश्वास कर इसकी शरण हूँ। हे ईश्वर ! अब पतवार तेरे ही हाथ में है। बेड़ा पार कर या मझधार में छोड़ दे, तेरी मर्जी।'' इसी तरह के तर्क जाल में रात कब कट जाता, पता नहीं चलता। कभी बारह बजे तो कभी एक बजे रात नींद आती। कभी–कभी तो वह भी नहीं। ब्रह्म मुहूर्त में जब अजान पड़ता तो पता चलता कि सवेरा हो चला है। थोड़ी झपकी आती भी तो मुर्गे की बाँग और कबूतर की गुटुर–गूँ से आँगन में शोर होने लगता। तब वो उठ बैठते और घूमने निकल जाते। इसका नतीजा यह हुआ कि रात के तनाव में दिन को घंटा–दो घंटा अवश्य सो जाते, पर शरीर की थकान नहीं जाती। परिणामत उनका सूगर लेवल और ब्लड प्रेशर धीरे–धीरे बढ़ता चला गया, फिर दिल का धड़कन अनियंत्रित होने लगा। शरीर में कमजोरी आने लगी और आँख में धुंधलापन छाने लगा। लाख हँसने–मुस्कुराने का प्रयत्न करें पर चेहरे पर वह खुशी लौटकर आवे ही नहीं। संयोग ऐसा हुआ कि आखिर एक दिन निर्मला ने भाव को कुछ ताड़कर बात छेड़ दी – ''फूफा क्या बात है, आप दिनों दिन कमजोर क्यों होते चले जा रहे हैं ? क्या मुझसे या मेरे बाल–बच्चों से कोई तकलीफ होती है ?'' बात को टालने की बहुत कोशिश त्रिभुवन बाबू ने की, पर निर्मला की जिद्द के आगे अपना मौन उन्हें तोड़ना ही पड़ा।'' दिल का दर्द पानी बनकर आँखों से छलक पड़ा। दोनों गाल पर बूँद–बूँदकर टपक पड़े। निर्मला उठकर और माँ की तरह अपने आँचल से ममतापूर्वक पोंछती हुई रुधे गले से बोली – ''क्यों रो रहे हैं, फूफा, बोलिए तो ? ममता और प्यार पाकर त्रिभुवन बाबू निहाल हो गए। फिर आँसुओं के घूंट पीकर कहा – ''बेटी भला तुम क्या अपराध करोगी। भगवान तुझे सदा खुशहाल रखे, यही मेरी उससे प्रार्थना है। जब तुमसे मुझे कोई अपमान मिल ही नहीं रहा है तो झूठा कलंक क्यों लगाऊँ ?'' इसके बाद उन्होंने अपने जीवन की सारी पिछली कहानी और पत्नी का व्यवहार उसके सामने उड़ेल कर रख दिया। फिर बार–बार पूछे – ''बताओ निर्मला ! इसमें मैं कहाँ तक दोषी हूँ ? मेरी बेचैनी का यही कारण है और इसी से मुझे रातको ठीक से नींद नहीं आती है। अब तो याददाश्त भी कमजोर होने लगा है। पता नहीं आगे क्या होगा ?''

इस पर निर्मला ने कहा – ''फूफा! मैं सौगन्ध खाकर पुनः कहती हूँ कि मेरे जीते जी आपको कोई तकलीफ नहीं होगी। विश्वास रखिए और जहाँ कहीं भी कोई शिकायत हो, खुलकर कहिए। आप दीदी (फूआ) और बेटी–दामाद के व्यवहार भूल जाइये और शान्ति से रहिए'' इसके बाद एक दिन निर्मला उन्हें लेकर शहर चली गई और किसी अच्छे डॉक्टर से चेकप कराकर ले आयी। डॉक्टर ने उन्हें तनावमुक्त और प्रसन्नचित्त रहने का परामर्श दिश। साथ ही सूगर से बचने की दवा लिख दी। सारी बीमारियों की जड़ वही थी। चावल और मीठा से परहेज करने को भी कह दिया। उस दिन के बाद से धीरे–धीरे उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा। दिल के

शिकवे आँसुओं में बह चुके थे। निर्मला की आत्मीयता ने उन्हें नई राहत दी थी।

गृह त्याग के बीते पाँच वर्षो में उन्होंने कई महत्वपूर्ण काम निर्मला के कर दिये। विश्वास ही दृढ़निश्चय पैदा करता है। निर्मला पर विश्वास कर उन्होंने इन पाँच वर्षो में उसके पूरे मकान को तोड़कर ईट की दीवार पर ढलाई करवा दी। घर के अन्दर ही शौचालय बनवा दिया। कुएँ को भी पक्का करवा दिया। निर्मला का बड़ा बेटा विनोद अब घर–गृहस्थी संभालने योग्य हो गया था। उसके लिए एक जोड़ा बैल खरीद दिये ताकि वह खुद खेती–गृहस्थी संभाल सके। वह लड़का भी अब मैट्रिक पास कर चुका था। अच्छे अंक नहीं आ पाने से उसे कॉलेज भेजना उन्होंने उचित नहीं समझा। पर उसमें आत्मविश्वास भरते गए, गृहस्थी में मन लगाने का प्रेरित करते हुए। इसी बीच निर्मला के गाँव में ही प्राइवेट बैंक खुल गया। संयोग ऐसा रहा कि उसके उद्घाटन के दिन ही वे बिना निमंत्रण के बैंक चले गए। वहाँ मुख्य अतिथि द्वारा फीता काटकर उद्घाटन किया गया। फिर नये–नये खाताधारियों के पासबुक खुले। साथ में विनोद था। उन्होंने उसके नाम से ही पाँच सौ रुपये देकर पहली पासबुक खुलवा दिया। इससे माइक पर विनोद का नाम उद्घोषित हुआ और उत्साहवर्द्धन के लिए उसके गले में बैंक की ओर से माला पहनाया गया। घर आकर उन्होंने विनोद को समझाया – ''बेटा ! मन लगाकर खेती करो और जो भी बचत हो, माँ को बताते हुए इस खाते में रकम जमा करते जाओ। पैसे बचाकर रखते जाओगे तो भविष्य में तुम्हें ही काम आएगा। जब तक जिन्दा हूँ, तुम लोगों का उपकार करता रहूँगा.....

क्रमशः जारी .....

अब और अगले अंक में।

डॉ. भुवनेश्वर मोदी
मोदी भवन, ब्लॉक मोड़,
पतरातू, जिला – रामगढ़

बरनवाल भवन न्यास द्वारा गणतंत्र दिवस मनाया गया

दिनांक 26 जनवरी, 2019 दिन शनिवार को बरनवाल भवन न्यास द्वारा बरनवाल भवन, कदमकुआँ, पटना में 70वां गणतंत्र दिवस समारोह हर्षोल्लास मनाया गया। बरनवाल भवन न्यास के कोषाध्यक्ष श्री अनिल कुमार गुप्ता द्वारा पूर्वाह्न 11:15 बजे झण्डोत्तोलन किया गया। तत्पश्चात् सामूहिक रुप से राष्ट्रीय गान गाया गया।

बरनवाल भवन न्यास के अध्यक्ष श्री जयशंकर प्रसाद तथा सचिव डा. रंजीत कुमार ने सभी उपस्थित लोगों को 70वां गणतंत्र दिवस की बधाई एवं शुभकामनाऐं दी।

उक्त अवसर पर बरनवाल समाज के होनहार श्री रौशन कुमार को इस वर्ष सीए, फाइनल करने पर बरनवाल भवन न्यास की ओर से सम्मानित किया गया तथा उसके उज्जवल भविष्य की कामना की गयी।

बरनवाल भवन न्यास की ओर से आगन्तुक गणमान्य के लिए राष्ट्रीय मिठाई, जलेबी के साथ चाय–नाश्ते का उत्तम प्रबंध किया गया था। सबों ने सामूहिक रुप से इसका आनन्द उठाया। बरनवाल भवन को तिरंगा झण्डा एवं बैलून से आकर्षक रुप से सजाया गया था।

उक्त अवसर पर बरनवाल भवन न्यास के अध्यक्ष श्री जयशंकर प्रसाद, सचिव डॉ. रंजीत कुमार, कोषाध्यक्ष श्री अनिल कुमार गुप्ता, श्री रमेश चन्द्र, श्री टी.एन. प्रताप, डॉ. जवाहर लाल, डा. सर्वदेव प्रसाद गुप्ता, श्री प्रदीप कुमार बरनवाल, डा. अजय कुमार, प्रमोद कुमार, प्रिंस कुमार, विजय कुमार (अवकाश प्राप्त ड्रग कन्ट्रोलर) डा. दिवाकर लाल, श्रीकृष्ण कुमार बरनवाल, पंकज कुमार, अमरनाथ छेदी, सुनील कुमार, मुकेश कुमार, अरुण कुमार, विनोद सम्राट, संदीप कुमार, शिवरानी बरनवाल, अलका बरनवाल, रेणु देवी, रेखा बरनवाल, कोमल बरनवाल सहित सैकड़ों की संख्या में गणमान्य उपस्थित थे।

डा. रंजीत कुमार, सचिव

बरनवाल सेवा सदन न्यास, धनबाद

बरनवाल सेवा सदन, धनबाद के निर्माणार्थ सहयोग करें। सहयोग करने वाले का नाम बरन संकल्प में प्रकाशित किया जायेगा।

1. 10000/– या ऊपर का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम।
2. एक लाख रुपये का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम के साथ–साथ हॉल में तैलिय चित्र।
3. दो लाख पचास हजार रुपये का सहयोग देने वालों के नाम पर एक वातानुकूलित कमरा, हॉल में तैलिय चित्र व शीलापट्ट पर नाम।
4. दो लाख पचास हजार रुपये से अधिक का सहयोग देने वाले समाज के भामाशाहों का नाम शीलापट्ट पर वरीयता क्रम से दी जायेगी।

सेवा सदन भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है, समाज के सभी सम्मानित सदस्यों से सहयोग की अपील है। आप हमें सीधे हमारे एकाउंट में भी राशि जमा कर सहयोग कर सकते हैं। हमारा एकाउंट विवरण निम्नवत है–

बरनवाल सेवा सदन न्यास

बैंक : यूको बैंक, हीरापुर ब्रांच
धनबाद

खाता सं. : 01910100935484

IFSC Code : UCBA0000191

इस संदर्भ में आप निम्नवत लोगों से भी संपर्क कर सकते हैं।

पी.एल. बरनवाल — अध्यक्ष
मो. : 9431187661
7004188137

बालेश्वर प्रसाद — सचिव
मो. : 9431725382
7717762093

श्रीनिवास रामानुजन

रात्रि में नील गगन में चांदनी का मंद प्रकाश ! वहां न चंद्रमा न बादल। आकाश निरभ्र व सुन्दर। ऐसे समय गगनमंडल में कहीं दूर एकाध तेजपुंज का अकस्मात चमकना। क्षणभर उसका प्रखर तेज से दमक उठना, विद्युल्लता के वेग से संपूर्ण अंतराल पर छा जाना और पलक झपकते ही उसका अंतर्धान हो जाना, ऐसा होता है उल्का का अत्यल्प किंतु जाज्वल्य प्रवास !

किसी अज्ञात स्थान पर उदित होना, स्वयं को दग्ध कर स्वयं के प्रकाश से संपूर्ण जगत में उजाला फैलाना व नई दिशा को खोजते हुए अचानक उठकर इस संसार से विदा लेना, यही उसका गतिमान जीवन होता है। बिल्कुल इसी प्रकार था, श्रेष्ठ भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का जीवन। उतना ही तेजोमय व गतिमान !

असाधारण बुद्धिमता का महामेरु

इ.स. 1850 के बाद का समय ! कथा तमिलनाडु प्रांत के कुंभकोणम् गांव की। वहां श्रीनिवास अय्यंगार नाम के सज्जन रहते थे। वे एक निजी कपड़े की दुकान में काम करते थे। जो थोड़ा बहुत वेतन मिलता था, उसी से वे अपना जीवन यापन करते थे। उनके छोटे से परिवार में पत्नी कोमलम्माल व सास रंगम्माल थे। कोमलम्माल कुशाग्र बुद्धि की महिला थी जबकि रंगम्माल परमभक्त थी। समीप के नामकल गांव की नामगिरी देवी की वह आराधना करती थी। देवी प्रसन्न होकर उसके शरीर में संचार करती थी। शरीर में देवी का संचार होने पर वह देवी ही रंगम्माल के मुंह से बोलने लगती थी। एक बार अय्यंगार पति–पत्नी ने पुत्र प्राप्ति की कामना से देवी की श्रद्धापूर्वक प्रार्थना की। बाद में रामानुजन ने उनके यहां जन्म लिया। इसलिए सहज ही उनके मन में यह धारणा पक्की हो गई कि यह संतान नामगिरीदेवी का ही प्रसाद है।

रामानुजन का जन्म 22 दिसम्बर 1887 को हुआ।

उस समय भारत पराधीन था। भारत पर अंग्रेजों का राज था।

पांच वर्ष की आयु में रामानुजन जिस शाला में दाखिल हुआ वह एक सामान्य सी शाला थी जो बगल के मकान के दालान में लगा करती थी। दो वर्षो बाद वह कुंभकोणम् के टाउन हायस्कूल में जाने लगा। इतनी कोमल आयु में उसे यह प्रश्न उद्विग करता रहता था कि गणित का सबसे बड़ा सत्य कौन सा है। शेष कोई सवाल उसके सामने नहीं टिक पाता था।

एक बार उसकी कक्षा में एक मजेदार घटना हुई। अंकगणित पढ़ाया जा रहा था। शिक्षक समझा रहे थे, ''मान लो तुम्हारे पास पांच फल हैं। और वह तुम पांच लोगों के बीच बांटते हो तो प्रत्येक को एक ही फल मिलेगा। मान लो दस फल हैं जो दस लोगों में बांटते हो तो भी प्रत्येक को एक ही फल मिलेगा। इसका अर्थ यह है कि पांच हो या दस, किसी भी संख्या में, उसी संख्या का भाग देने पर, फल एक ही आता है। इसलिए बच्चों, यही गणित का नियम है।

शिक्षक के ऐसा कहते ही रामनुजन तत्काल उठे और उन्होंने प्रश्न किया, ''गुरुजी ! मान लो हमने शून्य फल शून्य लोगों के बीच बांटे तो क्या प्रत्येक के हिस्से में एक फल आयेगा ? शून्य में शून्य का भाग देने पर उत्तर 'एक' ही आयेगा ?'' यह प्रश्न सुनकर शिक्षक भी चकरा गए व रामानुजन की विलक्षण बुद्धि को देखकर चकित रह गए। क्योंकि अब तक किसी विद्यार्थी ने उनसे ऐसा प्रश्न नहीं पूछा था। यह बात महत्व नहीं रखती कि उस समय शिक्षक ने रामानुजन को क्या उत्तर दिया बल्कि महत्व की बात यह है कि उस अल्पायु में भी रामानुजन की विचारशक्ति कितनी उंचाई को स्पर्श कर रही थी। शून्य में शून्य का भाग देने का विषय सामान्य गणित में नहीं आता। वह गणित विज्ञान का कलनशास्त्र है अर्थात् वह केलक्युलस विभाग में आता है। सामान्यतः कॉलेज की पढ़ाई में उसका समावेश होता हैं।

अखंड ज्ञानसाधना

रामानुजन को बचपन से गणित का इतना लगाव था कि कक्षा में सिखाये गए गणित का अभ्यास करने से उसका समाधान नहीं होता था। वह आगामी कक्षा के गणित करने लगता था। दसवीं में पढ़ते हुए उसने बी.ए. पदवी परीक्षा में रहनेवाले त्रिकोणमिती शास्त्र का अभ्यास पूर्ण कर लिया था। इसके अतिरिक्त 'लोनी' नामक पाश्चात्य लेखक द्वारा 'ट्रिगनॉमेंट्री' विषय पर लिखित दो ग्रंथों पर उसकी नजर पड़ते ही उसने उन्हें भी आत्मसात कर लिया। बाद में उसने इस पर स्वतंत्र संशोधन भी किया। मर्से भींगने से पूर्व ही उसके द्वारा किया गया यह कार्य, उसकी अलौकिक प्रतिभा की साक्ष देता है।

अभी वह पंद्रह वर्ष का ही हो पाया था कि एक ब्रिटिश लेखक द्वारा लिखित 'सिनॉप्सिस ऑफ प्योर एण्ड एप्लाइड मेंथेमेटिक्स' नामक ग्रंथ उसके हाथ लगा। रामानुजन इस पुस्तक पर अक्षरशः टूट पड़ा। उससे इस अपार बुद्धिमता के मेरु की भूख कुछ शांत हुई होगी। रामानुजन को विश्वविद्यालय की शिक्षा नहीं मिल पाई थी। किसी से मार्गदर्शन भी नहीं मिला था। फिर भी अपनी स्वयंभू प्रज्ञा से किशोरावस्था में उसके द्वारा सम्पादित ज्ञान साधना असाधारण थी।

रामानुजन 1903 के दिसम्बर में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। उसे उसके अपूर्व यश के कारण सुब्रहमण्यम छात्रवृत्ति मिली। रामानुजन को कुंभकोणम् के महाविद्यालय में सम्मानपूर्वक प्रवेश मिला। उस समय 'फर्स्ट ईयर इन आर्टस्' के अभ्यासक्रम में गणित, शरीरशास्त्र, ग्रीस व रोमन देशों का इतिहास, अंग्रेजी व संस्कृत इतने विषय रहा करते थे। किंतु रामानुजन को गणित की दुर्दम्य पिपासा थी। वही उसका लक्ष्य था। ध्यान, मन और स्वप्न में उसे केवल गणित ही दिखाई देता था। इसका फल यह निकला कि वर्ष की अंतिम परीक्षा में उसे गणित विषय में अग्रक्रमांक मिला किंतु शेष विषयों में पास होने लायक न्यूनतम अंक भी वह प्राप्त नहीं कर सका। वह अनुत्तीर्ण हो गया और परिणामस्वरुप सुब्रहमण्यम छात्रवृत्ति से वह हाथ धो बैठा।

रामानुजन को इस असफलता से अत्यंत दुःख हुआ। इससे भी अधिक वह इस बात से व्यथित हुआ कि उसने अपनी स्नेहमयी माता को दुःख पहुंचाया।

घर में रोज ही उदरपोषण की समस्या बनी रहती थी जिस कारण शुल्क देकर महाविद्यालयीन शिक्षा प्राप्त करना, उसके लिए कठिन था। नौकरी करने का विचार करने पर कुंभकोणम् जैसे छोटे शहर में वह मिल पाना कठिन था। अंततः रामानुजन को नौकरी खोजने शहर जाना पड़ा। मद्रास की उत्तर दिशा में आंध्रप्रदेश में वह काफी भटका। किंतु कुछ भी हाथ न लगने से निराश होकर वह कुंभकोणम् वापस लौटा। तब तक सन् 1905 शुरु हो चुका था।

बाद में कुछ विलंब से क्यों न हो, उसने विद्यालय में नाम लिखाया किंतु हाजिरी पूरी न होने के कारण उसे परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी गई। अंततः उसने कुंभकोणम् छोड़ दिया। वह मद्रास आया। वहां एक छोटे से झोपड़ीनुमा घर में वह अपनी नानी के साथ रहने लगा। वहां उसने विद्यार्थियों की ट्यूशन कर उससे प्राप्त होने वाले पैसों से किसी प्रकार गुजर बसर की। जैसे तैसे कुछ पैसे कमाकर वह संकल्पपूर्वक मद्रास के पद्यप्पय्या कॉलेज में पढ़ने लगा। दिन का अधिकांश समय वह महाविद्यालय में बिताता था। सारा समय वह गणित की धुन में ही व्यतीत करता। अपनी कुशाग्र बुद्धि के कारण वह प्राध्यापक का लाडला शिष्य बन गया। सहपाठियों के लिये तो वह गणित का जादूगर ही था।

पढ़ाते समय प्राध्यापक कहीं भूल से किसी जगह अटक जाता था तो वह रामानुजन की ओर आशापूर्ण नजरों से देखता था। तब रामानुजन उतनी ही सहजता से व निरसंकोच श्यामपट (ब्लैकबोर्ड) की ओर बढ़ता था। एकदम अलग पद्धति से व संक्षेप में सवाल हल कर वह सभी को चकित कर देता था।

जब अंतिम प्रयास के रुप में 1907 में उसने निजी रुप से परीक्षा दी किंतु गणित के छंद के कारण वह अन्य विषयों में फिर बुरी तरह पिछड़ गया। उसके स्वप्न चूरचूर हो गए व उसे कॉलेज की पढ़ाई सदा के लिए छोड़नी पड़ी।

रोगग्रस्त शरीर व जीवनयापन की चिन्ता मानों जन्म से ही उसके साथ लगी थी। निराश न होते हुए उसने अपनी अखंड ज्ञान साधना आगे भी जारी रखी। रामानुजन सृजनशील व्यक्ति था। उसके मस्तिष्क में सदा कोई नई कल्पना जन्म लेती रहती थी। वह कहा करता था कि नामगिरीदेवी मुझसे यह काम करा लेती है। उसकी कृपा प्रसाद से ही स्वप्न में मेरी आंखों के सम्मुख गणित के नवीन प्रमेय तैरने लगते हैं। बिस्तर से उठते ही मैं उसे कागज पर उतार लेता हूं और वह सही है या नहीं इसे जांच लेता हूं।

लौकिक जीवन

उस काल में संप्रदाय की परम्परानुसार रामानुजन का विवाह जानकी नामक 9 वर्ष की बालिका से कर दिया गया। उस समय रामानुजन की आयु 22 वर्ष थी। अब विवाह हो जाने से नौकरी की आवश्यकता बहुत बढ़ गई। उदरपोषण के लिए कोई काम खोजना उसके लिए अनिवार्य था। गरीबी व भूख जीवन के कटु सत्य है। गणित के कोरे सिद्धांत उन्हें हल नहीं कर सकते।

रामानुजन नौकरी की खोज में बाहर निकला। मद्रास के इंडियन मैथेमेटिकल सोसायटी के उच्चाधिकारी श्री रामस्वामी अय्यर से भेंट कर उसने किसी छोटी मोटी नौकरी उसे दिलाने की प्रार्थना की। और कोई प्रमाण पत्र या दस्तावेज उसके पास नहीं थी। उसके पास थी केवल गणित की एक कॉपी जिसे वह बड़े जतन से अपने पास रखे हुए था। प्रोफेसर रामस्वामी ने सहज ही उस कॉपी के पन्ने पलटे। वे उसे देखकर आश्चर्यचति रह गए। उन्हें प्रत्येक पृष्ठ पर गणितशास्त्र का नवअंकुर फूटता दिखाई दिया। उन्हें लगा कि तहसील कार्यालय में कलम घसीटी करने में इस सृजनशक्ति का अन्त नहीं होना चाहिए। यह नवप्रतिभा कुम्हलानी नहीं चाहिए। इसलिए उन्होंने प्रेसीडेन्सी कॉलेज में बड़े पद पर कार्यरत श्री शेषु अय्यर के नाम सिफारिशी पत्र लिखकर रामानुजन से उनसे भेंट करने को कहा। संयोग की बात थी कि शेषु अय्यर ने कुछ समय कुंभकोणम के महाविद्यालय में भी काम किया था। रामानुजन के संबंध में उन्हें जानकारी थी। उसके बुद्धिसामर्थ्य से वे अवगत थे। उनकी जान पहचान के फलस्वरुप रामानुजन को महालेखाकार के कार्यालय में अस्थायी नौकरी मिल गई। रामानुजन अलौकिक प्रतिभाशाली होने पर भी कुछ

समय तक उस कार्यालय का हिसाब–किताब लिखते रहना उसके भाग्य में बदा था।

बहुतेरे लोगों को लगता था कि रामानुजन के गुणों का गौरव हो। किन्तु वह समय गुलामी का था। इसलिए कोई वैसा करने का साहस नहीं जुटा पाता था। सच तो यह है कि कई शताब्दियाँ बीत जाने पर ऐसे नवरत्न जन्म लेते हैं। और वे भी पृथ्वी में कहां व कब जन्म लेंगे कहना संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में एक नये युग की गति देने का सामर्थ्य रंखनेवाला विश्वव्यापी कीर्ति के गणितज्ञ ने भारत में जन्म लिया, यह हम सभी का कितना बड़ा सौभाग्य है। किन्तु ऐसे भारत रत्न की प्रतिभा को पुरस्कार देने कोई महानुभाव सामने नहीं आया, यह एक खेद की बात है।

उन्हीं दिनों एक दिलचस्प घटना हुई। गरीब बेचारा रामानुजन ! सड़क के किनारे चलते–चलते सोच रहा था, अब अपना क्या होगा ? तभी सामने से आ रहे उसके एक मित्र ने उसे टोका, ''रामानुजन, आजकल कई लोग कहने लगे हैं कि तुम एक असामान्य पुरुष हो। इतने बड़े अवतारी पुरुष कब से बन गये ?''

मित्र की बात सुनकर, रामानुजन को आश्चर्य का धक्का ही पहुँचा। वह समझ नहीं पाया कि इस पर हंसा जाय या रोया जाय।

किन्तु उसने तुरन्त स्वयं को सम्हाल लिया। औपरोधिक स्वर में, रामानुजन ने उससे पूछा, ''मित्र, क्या कहा ? मैं और असाधारण पुरुष ? हां ! यह भी ठीक ही है। देखो, मेरे हाथ की ओर एकबार जी भरकर देखो। मेरे हाथ का यह रुखापन ही मेरी असामान्यता की गवाही देगा।''

मित्र ने तुरन्त पूछा, ''पर ये ऐसे कैसे हो गया?''

हंसते हुए रामानुजन ने कहा, ''यही तो असली बात है। मुझे महापुरुष बनाते–बनाते, उन बेचारों का रंगरुप बदल गया। मैं स्लेट पर गणित हल करता हूं। मुझे बार–बार उसे पोंछना पड़ता है। कपड़े की चिंधी की बजाय, मैं हाथ का ही उपयोग करता हूं।''

यह सुनकर मित्र ने तुरन्त सलाह दी, इस पर तो एक सरल सा उपाय है। स्लेट की बजाय कागज का प्रयोग करो।

रामानुजन ने दुःखी स्वर में कहा, ''भले आदमी ! जहां रोज पेट के लिये एकबार अन्न मिलने की मुसीबत हो, वहां कागज के लिये पैसा कहां से लाऊं ?''

इस भांति हरघड़ी पैसे का रहनेवाला अभाव होने पर भी रामानुजन ने गणित के प्रति प्रेम को कायम रखा।

इतने में अस्थायी नौकरी का समय पूरा हो गया। अब फिर रामानुजर के सम्मुख उदरपोषण का प्रश्न आ गया। किन्तु इस समय भी उसे शेषु अय्यर ने सहारा दिया। आंध्रप्रदेश के नेल्लूर जिले के जिलाधिकारी श्री आर. रामचंद्रन के नाम उन्होंने चिठ्ठी लिख दी। श्री रामचंद्रन मैथेमेटिकल सोसायटी के अध्यक्ष होने के कारण गणित के इस अभ्यासक के लिए उनके मन में अनुकंपा उत्पन्न हुई।

रामानुजन से हुई पहली भेंट का वर्णन उन्होंने अत्यंत रोचक शब्दों में किया है। वे लिखते हैं –

''मुझ से भेंट करने आया तरुण दुबला–पतला, काला व देहाती जैसा दिखाई दे रहा था। इन सब बातों में मेरा चित्त आकर्षित करनेवाली एक ही बात उसमें थी। वह थी उसकी चमकदार आंखें। कुंभकोणम से वह मद्रास चला आया था। उसका भी उतना ही सबल कारण था। उसके मन में यही तड़प थी कि उसे गणितशास्त्र का अभ्यास करने का पर्याप्त अवसर मिले। उसे और किसी मानसम्मान की अभिलाषा नहीं थी। वह न जन का उपासक था न धन का ! वह केवल गणित का उपासक था। केवल तो उतने से ही समाधान कर वह गणित साधना में आनंदमय अवस्था में स्वयं को भूल जानेवाला निर्लेप साधक था।

''उसने अपनी कॉपी में लिखे गणित सूत्र मुझे दिखाये। अपनी योग्यता मेरे ध्यान में लाने का उसका यह प्रयास रहा होगा। मैंने उस कॉपी के पन्ने पलटकर देखे किन्तु उसका कुछ संदर्भ मुझे ठीक तरह समझ में नहीं आ रहा था। मैंने उसे टालने के लिए बाद में फिर कभी मिलने को कहा। वह दूसरी बार मुझसे मिलने आया। तब शायद उसे मेरी असमर्थता का आभास हो चुका था। क्योंकि तब उसने मुझे पहले की अपेक्षा सरल उदाहरण दिखाने का प्रयत्न किया किन्तु वे भी मेरे पढ़े हुए ग्रन्थों की तुलना में कितने ही उच्च दर्जे के थे। बोलते बोलते वह मुझे

एलिपिटक अनुकलनांक व अधिपट श्रेणी (हॉयपर जॉमैट्रिक) तक ले गया। इतना ही नहीं वह अपसरण सिद्धांत तक जा पहुंचा। तब तक उसके संबंध में मेरे विचार काफी बदल चुके थे। उपेक्षा का रुपांतर अब आदर भाव में हो गया था। सचेत होकर मैंने उससे पूछा, ''बेटा ! मैं तुम्हारी कौन सी मदद कर सकता हूं ?''

वह बोला, ''सर, मेरा संशोधन चलाने के लिए पेट भरनेलायक अन्न मिल जाये, यही बहुत है।'' सरकारी विभाग में उसे परेशानी होगी, प्रतिभा कुंठित होगी, यह विचार कर मैंने उसे आश्वासन दिया कि हर माह खर्च के लिए लगनेवाली रकम मैं तुझे दिया करुंगा तथा मद्रास शहर में रहकर वह अपना संशोधन कार्य जारी रखे, यह सलाह दी। यह समस्या का समाधान नहीं था बल्कि एक अस्थायी व्यवस्था थी किन्तु फिर भी इससे डूबने को तिनके का सहारा मिल गया।

इसका एक ही उपाय था – – विश्वविद्यालय से संशोधन वेतन दिलाना, किन्तु वहां भी विफलता मिली। बाद में कुछ दिनों के बाद ग्रहमान बदला। श्री शेषु अय्यर की कृपा से 1 मार्च 1907 को रामानुजन को पोर्ट ट्रस्ट में पच्चीस रुपये वेतन पर लिपिक की नौकरी मिल गई। चाहे जो भी हो, पेट की चिन्ता तो दूर हुई व रामानुजन को अपना छंद पूरा करने के लिए कुछ तो फुर्सत मिली।

रामानुजन के कर्तृत्व का क्षितिज विस्तृत हो उठा। इंडियन मैथेमेटिकल सोसायटी की शोधपत्रिका में उसका गणित का प्रबंध प्रकाशित होने लगा। सन् 1911 के प्रबंधक में रामानुजन का 14 पृष्ठों का प्रदीर्घ शोधपत्र व 9 प्रश्न प्रकाशित हुए। इस कारण उस विभाग के वरिष्ठ अधिकारी श्री फ्रांसिस स्प्रिंग का रामानुजन पर अनुग्रह बढ़ गया। इसके अतिरिक्त उस विभाग के प्रबंधक श्री नारायण अय्यर गणित के अभ्यासक व इंडियन मैथेमेटिकल सोसायटी के कोषाधिकरी थे। इस कारण रामानुजन को सभी ओर से अनुकूलता प्राप्त हुई। ईश्वर की अनुकूल कृपा होने से कैसा योग आता है, यह स्पष्ट दिखाई दिया। भारत की वेधशाला के तत्कालीन प्रमुख श्री गिल्बर्ट वाकर किसी कार्य हेतु मद्रास पोर्ट ट्रस्ट में पधारे थे। उस अवसर का लाभ उठाकर श्री फ्रांसिस स्प्रिंग ने उन्हें श्री रामानुजन के शोध कार्य से अवगत कराया। साथ ही उसकी कॉपियां भी उन्हें दिखलायीं। उन पर एक नजर डालते ही रामानुजन के शोध कार्य का महत्व उनके ध्यान में आ गया। रामानुजन के संशोधन के संबंध में पता चला। उन्होंने उसकी लिखी कॉपी व प्रपत्र भी देखे। उस पर निगाह डालते ही रामानुजन के महत्वपूर्ण संशोधन का उन्हें आभास हो गया। उन्होंने तत्काल मद्रास विश्वविद्यालय के कुलसचिव को एक पत्र लिखा –

''मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के जमाखर्च विभाग में लिपिक एस.रामानुजन हैं जिनके काम का मैंने सर फ्रांसिस स्प्रिंग की उपस्थिति में अवलोकन किया। उनके काम की नवीनता व दर्जा कैंब्रिज में प्राध्यापक साधारणतः जो काम करते हैं उनके मुकाबले का है। इसलिए रामानुजन अपना संपूर्ण समय गणित के संशोधन को देस के, ऐसी व्यवस्था मद्रास विश्वविद्यालय को करनी चाहिए।''

गणित–शास्त्र विषय के अधिकारी व्यक्ति व भारत सरकार के वेधशाला के सर्वोच्च अधिकारी के 26 फरवरी 1913 के उस पत्र के फलस्वरुप चक्र तेजी से घूमने लगा। विश्वविद्यालय ने दो वर्षो के लिये प्रतिमाह 75 रु. की छात्र–वृत्ति रामानुजन को देने का प्रस्ताव पारित किया किंतु ऐसे विद्यार्थी को जिसके पास पदवी न हो, छात्रवृत्ति देना विश्वविद्यालय के नियमों से बाहर था। इसलिए कुल सचिव मि. डयूजबरी ने राज्यपाल लॉर्ड पेटलैंड से संपर्क करके उनसे आवश्यक सम्मति प्राप्त की और 1 मई 1913 पूर्णकालिक व्यावसायिक गणितज्ञ बन गया।

एक अपरिचित भारतीय का पत्र

रात 11–12 बजे का समय था। कैंब्रिज विश्व विद्यालय के दो प्राध्यापक मंद दीप के प्रकाश में शांति से अपने हाथों में रखा पत्र दिलचस्पी से पढ़ रहे थे। दोनों के चेहरे पर बीच–बीच में विस्मयकारक भाव प्रकट हो रहे थे। कभी सराहना के तो कभी भ्रम में पड़ जाने के, कभी आश्चर्यचकित होने के तो कभी किसी चक्कर में उलझ जाने के भाव दृष्टिगोचर हो रहे थे। इन प्राध्यापकों में से एक जी.एच. हार्डी थे व दूसरे जे.ई. लिटलवुड थे। दोनों ही पूर्णाकी गणित के सुप्रसिद्ध संशोधक थे। इन दोनों को

चकित कर देनेवाला पत्र एक भारतीय का लिखा हुआ था। केवल मैट्रिक पास हुए बाईस वर्षीय लिपिक का। ऐसे मामूली आदमी ने गणित की इतनी ऊंचाई पा ली, इसका उन्हें विश्वास नहीं हो पा रहा था। किन्तु जिस व्यक्ति ने यह सूत्र खोज निकाले वह विलक्षण प्रतिमा का व्यक्ति होगा, इस बात में उन्हें रच मात्र भी शंका नहीं थी। रामानुजन का बुद्धिसामर्थ्य देखकर उन्होंने तय किया कि उसे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में बुला लेना चाहिए।

कैम्ब्रिज के मार्ग पर

कैम्ब्रिज जाने में रामानुजन के सम्मुख दो प्रमुख बाधायें थी। प्रथम यह कि उस समय समुद्र यात्रा निषिद्ध मानी जाती थी। दूसरी यह कि इतना पैसा कहां से लाया जाये ? इस कारण पहले रामानुजन कैम्ब्रिज जाने के लिये तैयार नहीं था। किंतु मित्रों व प्रो. हार्डी का बार–बार आग्रह वह हार्डी के गणितज्ञ शिष्य श्री नेविल से भेंट के फलस्वरुप रामानुजन को लगने लगा कि उसे गणित के और अधिक अध्ययन के लिये कैम्ब्रिज जाना चाहिए। तथापि मां की सम्मति और देवी का आज्ञा का प्रश्न सामने था। इसके लिये रामानुजन तीन रात्रि ध्यान मग्न बैठा रहा। कहा जाता है कि देवी ने रामानुजन की मां को स्वप्न में दर्शन दिये व उनसे कहा, ''देखो ! तेरा बेटा कहां बैठा है। विद्वानों की सभा में। उसे दिगंत कीर्ति मिली है। वे उसका गौरव कर रहे हैं। अब उसकी सफलता के मार्ग में बाधा मत डाल।'' मां की ओर से रामानुजन को शुभाशिर्वाद मिल गया। मां ने उससे कहा, ''तू इंग्लैंड जा और बड़ा होकर वापस लौट।''

मां को कैसा स्वप्न दिखाई दिया और उसने कैसे विदेश यात्रा की अनुमति दी, आदि सारी बातें रामानुजन ने नेविल को बताई। यह सुनकर नेविल को बहुत आनंद हुआ क्योंकि हार्डी ने उस पर रामानुजन को कैम्ब्रिज भेजने का दायित्व सौंप रखा था। नेविल ने रामानुजन की सम्मति की सूचना तत्काल हार्डी को भेजी। पैसे की व्यवस्था के लिये हार्डी ने मद्रास विश्वविद्यालय को पत्र लिखा। उन्होंने उसमें लिखा था कि –

''गणित के संशोधन में वर्तमान रीति व उसकी सूक्ष्मता का परिचय कराने का अवसर रामानुजन को शीघ्रातिशीघ्र मिलना, उसी प्रकार संशोधन के क्षेत्र में आज किस दिशा में संशोधन जारी है, यह भी उसे पता चलना आवश्यक है। इसलिए ऐसे गणितज्ञों का सहवास उसे बिना विलंब उपलब्ध होना सभी के हित में रहेगा। ऐसा करने पर रामानुजन की गणित की प्रतिभा अधिक विकसित होगी व उसका नाम गणित के क्षेत्र में अजर अमर हो जाएगा। उसके इस प्रगतिपथ के प्रवास में अपार सहयोग था, यह स्मरण कर भविष्य में मद्रास विश्वविद्यालय मद्रास शहर स्वयं को धन्य मानेगा।''

इस पत्र को मद्रास विश्वविद्यालय ने पूरा सम्मान दिया। 3–4 फरवरी के लगभग विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी ने 1 अप्रैल 1914 से दो वर्षो के लिये रामानुजन को 250 पौंड की दर से छात्रवृत्ति, संपूर्ण प्रवास खर्च तथा अन्य व्यय के लिये रकम देने का प्रस्ताव स्वीकृत किया।

एक महीने में सारी तैयारी करके माता, पिता, नानी, पत्नी व मित्र सभी से बिदा लेकर 17 मार्च को रामानुजन इंग्लैंड जाने के लिए जहाज में बैठा। उस जलयान का नाम था नेवासा और उसके साथ में थे प्राध्यापक नेविल।

रामानुजन को अपनी माता–पिता व पत्नी के प्रति आदर व प्रेम था। वे उसे कितना चाहते हैं, यह बात रामानुजन भलीभांति जानता था। इसीलिए जब मद्रास विश्वविद्यालय ने उसे 250 पौंड की छात्रवृत्ति दी तो उसने विश्वविद्यालय को लिखा, ''आप मेरे लिये यह सब कर रहे है जिसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं एकगरीब परिवार का कर्ता घटक हूं। इसलिए अपने इस परिवार को बेसहारा छोड़कर कैम्ब्रिज जाना सर्वथा उचित नहीं रहेगा। इसलिए मेरी छात्रवृत्ति से प्रतिमाह 60 रु. यहां मेरे परिवार को दे सकना यदि आपके लिए संभव हो तो मैं आपका अत्यंत आभारी रहूंगा। कृपया तत्संबंधी सूचना दें।''

विश्वविद्यालय द्वारा इस पर स्वीकृति देने के बाद ही रामानुजन ने शांत चित्त से नेवासा जलयान पर कदम रखा था। यह जलयान 14 अप्रैल को लंदन पहुंचा। 18 अप्रैल को रामानुजन कैम्ब्रिज गया। महीना डेढ़ महीना नेविल के घर में रहने के बाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के परिसर में ट्रिनिटी कॉलेज के छात्रावास में वह रहने लगा। कैम्ब्रिज में निवास के दौरान अन्त तक वह वहीं रहा।

कैम्ब्रिज में रामानुजन की दृष्टि से नयी दुनिया, नये लोग व नया वातावरण था। रोज नई बातें होती थीं व रोज कोई न कोई नई उलझनें पैदा होती थीं किन्तु रामानुजन के गणित संशोधन कार्य में कभी बाधा नहीं पड़ी।

मित्र कृष्णराव को 11 को लिखित पत्र में उसने लिखा, ''आजतक दो शोधिका पूर्ण की। हार्डी लंदन जा रहे थे। वे वहां मैथेमेटिकल सोसायटी के सदस्यों के सम्मुख मेरी पुस्तिका के एक प्रमेय पर बोलनेवाले हैं।

दो माह बाद 7 अगस्त को पत्र में उसने लिखा– ''अब तक मैंने तीन शोधिका पूर्ण की हैं। अक्टूबर के बाद ये सभी प्रकाशित होंगी। रामानुजन के अभ्यास करने व संशोधन करने की मूल रीति कैम्ब्रिज के गणितज्ञों की रीति से काफी भिन्न थी। वहां के गणितज्ञों को वह कभी–कभी अगम्य व अपूर्ण प्रतीत होती थी। तथापि प्रो. हार्डी सहृदयी व उदार मनोवृत्ति का व्यक्ति था। उसे इस बात के प्रति सहानुभूति थी कि किसी भी विश्वविद्यालय शिक्षा का लाभ न उठा पाने के बाद भी रामानुजन इतना अद्‌भुत काम कर रहा था। इसलिए उसने उस अलौकिक प्रज्ञावान को आधुनिक गणित पद्धति का लाभार्जन करा दिया।

कैम्ब्रिज में हार्डी, लिटलवुड व रामानुजन की त्रयी ने, रामानुजन की शोध पत्रिका पर अत्यंत परिश्रम पूर्वक काम किया। भारत में 1907 से 1911 व कैम्ब्रिज में 1914 से 1918 इस प्रकार कुल आठ वर्ष का काल रामानुजन के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। उसकी गहन बुद्धि व असामान्य प्रतिभा का परिचायक सिद्ध हुआ। कैम्ब्रिज में रहते हुए नींद, भोजन नित्यकर्म में लगनेवाले समय को छोड़ दिया जाये तो उसका संपूर्ण समय वाचन, मनन व लेखन में जाता था। वह गणित के उन्माद से ग्रस्त विलक्षण संशोधक था। इस अवधि में प्रकाशित उसकी शोधपत्रिकाओं की कुल संख्या 24 है।

इस संबंध में हार्डी ने कहा है, ''रामानुजन हाल के समय में हुआ सर्वोत्कृष्ट भारतीय गणितज्ञ है। उसने अपनी शोध पत्रिका में जो आविष्कार प्रकट किया है, उससे उसकी तीक्ष्ण व विलक्षण बुद्धि की व्यापकता दिखाई देती है।''

1917 में रामानुजन की कुल सात शोधिका प्रकाशित हुई। उसमें रामानुजन व हार्डी द्वारा मिलकर लिखी गई पूर्णांकी भाग पर शोधिका अनेक दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। लगभग डेढ़ सौ वर्ष तक न मिले विभाज्य आंकड़ों के लिये सूत्र उसने निश्चित किये। उसके द्वारा प्रयुक्त रीति व भविष्य का संभाव्य उपयोग, यह उस शोध पत्रिका में प्रकाशित अतिशय दूरगामी महत्व की बात सिद्ध हुई है।

काम के तनाव व पोषण की कमी के कारण 1917 के मार्च माह में रामानुजन बीमार पड़ गया और दुर्दैव से इस बीमारी से वह कभी अच्छा नहीं हुआ। रामानुजन को बीमारी का दुख था किन्तु इस अस्वस्था के कारण वह काम

Gram - Gupta
☎ (06274) 222050 (S)
GUPTA TEXTILES
Wholesale Cloth Merchant
Behind Bohra Market
Marwari Bazar, Samastipur - 848 101
(Bihar)
Prop : Indradeo Gupta
3/16

नहीं कर पा रहा था। इसका दुख उसे अधिक था। इंग्लैंड के गणमान्य व्यक्तियों व संस्थाओं ने उसके संशोधन व संशोधक वृत्ति की ओर ध्यान दिया था और लंदन की रॉयल सोसायटी ने उसके काम का महत्व जानकर इस असामान्य प्रतिभा के भारतीय गणितज्ञ को अपना सदस्य बना लिया था जो एक बड़े गौरव की बात थी।

रामानुजन के समय तक रॉयल सोसायटी के फेलो के रुप में भारतीयों में से सर आर्देसीर कर्सेटजी का उनके नौका निर्माण शास्त्र के कारण चयन किया गया था। किन्तु उसके बाद 77 वर्षो तक किसी भारतीय को यह सम्मान नहीं मिल पाया था। यह मान 1917 में रामानुजन को मिला। रामानुजन के बाद आगे चलकर श्री जगदीशचन्द्र बोस, सर सी.व्ही. रमन, मेघनाथ साहा, पी.सी. महालानोबीस व होमी भाभा इत्यादि श्रेष्ठ भारतीय शास्त्रज्ञों को यह गौरव प्राप्त हुआ।

मई 1918 के लगभग हार्डी ने चिन्तातुर होकर मद्रास विश्वविद्यालय को जो पत्र लिखा, वह कुछ अनपेक्षित था। उसमें रामानुजन के गंभीर रुप से अस्वस्थ होने का खेदजनक उल्लेख था। उसे इंग्लैंड के एक क्षयरोग चिकित्सालय में रखा गया था। औषधि, पथ्य सभी कुछ सावधानीपूर्वक जारी रखने पर भी उसका कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। उसकी देह व्याधि से जर्जर हो जाने पर भी उसकी बुद्धि की प्रखरता व तीक्ष्णता पूर्ववत बनी हुई थी।

प्रो. हार्डी एक बार उसके स्वास्थ्य की पूछताछ करने के लिए टैक्सी से गए। उस टैक्सी का नंबर था 1729। हार्डी ने रामानुजन को कहा, 1729 यह संख्या मुझे एकदम मामूली व नगण्य लगी। यह सुनते ही रामानुजन ने कहा, ''नहीं तो। यह संख्या अत्यंत आश्चर्यजनक है क्योंकि इसमें दो घनों का योग है।''

$$1729 = 1^3 + 12^3 = 9^3 + 10^3$$

अर्थात् $13 = 1 \times 1 \times 1 = 1$

$12^3 = 12 \times 12 \times 12 = 1728$

$1 + 1728 = 1729$

उसी प्रकार

$9^3 = 9 \times 9 \times 9 = 729$

$10^3 = 10 \times 10 \times 10 = 1000$

$729 + 1000 = 1729$

वह आगे बोला, ''इतनी आश्चर्यजनक दूसरी कोई भी संख्या नहीं है। यह सुनकर हार्डी आश्चर्यचकित रह गए। उनके एक और सहाध्यायी लिटलवुड तो कहते थे कि प्रत्येक घनसंख्या से रामानुजन का ऐसा ही निकट का संबंध है।

रामानुजन की स्मरणशक्ति व संख्या का गणन–सामर्थ्य अत्यंत असाधारण था। बीजगणित का मूलार्थ समझ लेने का और अनंत श्रेणी तक सहज रुप से व्यवहार करने का उसका सामर्थ्य अलौकिक था। उसके हाथ से संशोधन हो रहे थे वह होनेवाले थे।

रामानुजन अब तक शांत, विनोदी व खिलाड़ी वृत्ति का था किन्तु इस बीमारी से वह थोड़ा खिन्न हो गया। कभी–कभी तो वह किसी की बात सुनने की स्थिति में ही नहीं रहता था।

डॉक्टरों व प्रो. हार्डी ने विचार किया कि कुछ समय के लिये रामानुजन को भारत भेजने पर वहां की उष्ण हवा, घर का आत्मीयतापूर्ण वातावरण व बाल्यकाल के मित्रों की संगति में उसकी बीमारी घट सकती है। सौभाग्य से लगभग उसी समय चार वर्षो से जारी महायुद्ध भी समाप्त हो गया था और समुद्र में बिछाई गई सुरंगों का भय कम हो जाने से अब भारत प्रवास का खतरा भी कम हो गया था। तब हार्डी ने यह सोचकर कि रामानुजन की भारत वापसी के लिये यही समय उचित है, विश्वविद्यालय के कुल सचिव डयूजबरी को इस आशय का पत्र लिखा।

''रामानुजन को कुछ समय के लिए भारत वापस भेजने व उसके लिये कुछ स्थायी स्वरुप की व्यवस्था का विचार करने की अब आवश्यकता है। यह हर्ष की बात है कि रामानुजन के स्वास्थ्य में अब सुधार हो रहा है। शास्त्रीय जग में वह सम्मान का स्थान व कीर्ति प्राप्त कर लौट रहा है। ऐसा आज तक किसी भारतीय के साथ नहीं हुआ है। इस बात पर भारत उचित रुप से ध्यान देगा ऐसा मुझे विश्वास है। रामानुजन को भारत अपना अनमोल रत्न मानेगा ऐसी मेरी धारणा है।''

मद्रास विश्वविद्यालय ने जरा भी समय न गंवाते हुए रामानुजन को 9 दिसम्बर को पत्र भेजा। जिसमें 1 अप्रैल 1919

से पांच वर्षो के लिये 250 पौंड की छात्रवृत्ति, इंग्लैंड से भारत आने का खर्च, बाद में जब भी रामानुजन इंग्लैंड जाना चाहेगा, उस समय आने-जाने का संपूर्ण खर्च देना तय करने की विश्वविद्यालय ने सूचना दी।

मद्रास विश्वविद्यालय का यह पत्र मिला उस समय रामानुजन पट्नी के आरोध्य धाम में था। वहां से उसने 11 जनवरी को पत्र भेजा, ''आपका 9 दिसंबर का पत्रमिला। विश्वविद्यालय द्वारा उदारतापूर्वक दी जा रही सहायता को मैं साभार स्वीकार करता हूँ। मेरे भारत लौटने पर मिलने वाली राशि मेरी आवश्यकता की तुलना में बहुत अधिक होगी। अत: इंग्लैंड में मेरी बीमारी पर आनेवाला खर्च, मेरे घर के खर्च के लिए वर्ष भर के 50 पौंड व मेरा हमेशा का जो खर्च होगा वह सब काटकर जो पैसे बचे उनका उपयोग गरीब व छोटे बच्चों की शाला का शुल्क देने जैसे शैक्षणिक कार्यो में हो, यही मेरी अभिलाषा है।''

क्षय रोग चिकित्सालय से लिखा गया यह पत्र उसके मन की उदारता को प्रगट करता है।

रामानुजन को भारत लौटने की व्यवस्था शीघ्र ही पूर्ण हो गई। उसे लेकर नायोगा जहाज 27 फ़रवरी को निकला। समय धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। जिस विश्व विख्यात रॉयल सोसायटी ने अपनी अनमोल फेलोशिप देकर रामानुजन को सम्मानित किया था वह दृष्टि से ओझल हो गई। जिन्होंने उसे हार्दिक सहयोग व प्रेम दिया था और जरा भी भेदभाव नहीं रखा था, वे सभी लोग पीछे छूट गए।

इस विचार से रामानुजन उदास हो गया। ऐसी ही खिन्न मानसिक अवस्था में उसने जहाज पर एक माह बिताया। जिब्राल्टर, पोर्ट सईद, स्वेज पीछे छूट गए परन्तु इंग्लैंड में निवास की स्मृतियां पीछा नहीं छोड़ रही थी। अंत में 27 मार्च को जहाज बंबई पहुंचा व रामानुजन नीचे उतरा।

भारत आये हुए रामानुजन को पांच-छह महीने बीत गए फिर भी उसके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ। ज्वर ने उसके शरीर में घर कर लिया था। उसके अंग में पीड़ा होने लगी। मां व पत्नी का सान्निध्य रहने से उसका स्वास्थ्य सुधरेगा, यह कल्पना गलत सिद्ध हुई। किन्तु फिर भी वह घर के लोगों को यह आभास देने का प्रयत्न करता था कि वह मजे में है।

रामानुजन की पत्नी जानकी अम्माल कहती है- ''उनके इंग्लैंड से आने के बाद रामास्वामी अय्यर कई बार उनसे मिलने आते थे। एक बार उन्होंने जलवायु परिवर्तन के लिए तंजावर जाने का प्रेमपूर्ण अनुरोध किया। इस पर रामानुजन ने विश्लेषण किया 'तंजावर अर्थात् तनु जा वर' यही न ? (तमिल भाषा में तान् अर्थात् अपना, साव अर्थात मृत्यु और ऊर अर्थात स्थान) ऐसा शाब्दिक विश्लेषण वे सदैव किया करते थे। ऐसे ही एक बार उन्हें चेटपुट गांव ले जाया गया। वहां भी उन्होंने श्लेष किया, चेटपुट का अर्थ 'चटपट निपटाओ' यह बताने के लिये मुझे यहां लाये हो क्या ?'' वे अपनी स्वयं की मृत्यु के संबंध में इतनी सहजता से बोलते थे और ऐसा आभास देने का प्रयत्न करते थे कि निकट भविष्य में उनकी मृत्यु संभव नहीं है।

09002726608
08348697971

AJIT KUMAR BURNWAL

NEW ALANKAR JEWELLERS
PUCCA BAZAR, ASANSOL - 1
(OPP. HEAD POST OFFICE)
PHONE : 0341 -2309248

JEWEL GARDEN
88, G. T. ROAD
OPP. BAZAR, KOLKATA, ASANSOL - 1
PHONE - 0341 - 2221494

8/19

A House of Exclusive 22 Carat Halmark Showroom

इस अशक्त व रुग्ण स्थिति में भी रामानुजन का गणित प्रेम कम नहीं हुआ था। उन्हें गणित की नई–नई कल्पनायें सूझती थीं। वह बिस्तर से उठकर बैठ जाते और तेजी से गणित करने लगते। कोई भी संकल्पना उनके मन में आकार लेने लगती तो उसे उचित रुप देने पर ही उनको शांति मिल पाती थी।

12 जनवरी को उन्होंने प्रो. हार्डी को पत्र भेजा। उसमें लिखा था –

हाल ही में मुझे एक नयी नियामिका की संकल्पना सूझी है। इस नियामिका को मैंने 'मॉक–थिटा' नाम दिया है। इस नियामिका के मजेदार उदाहरण मैं इस पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूं। इस पत्र के साथ उसने पांच–छह कागज जोड़े थे। रामानुजन द्वारा हार्डी को लिखा यह अन्तिम पत्र था।

किन्तु उस पत्र के साथ संलग्न गणित उसका अंतिम गणित नहीं था। 12 जनवरी के बाद जो प्रमेय उसे सूझे वह सभी उसने व्यवस्थित रुप से दर्ज किये और वे सभी कागज उसने क्रमवार लगा दिये। वह इसे हार्डी को भेजनेवाला था किन्तु.....!

.....इसके पूर्व ही 26 अप्रैल 1920 को उसका देहावसान हो गया। और इसके साथ ही उसकी आयु का गणित समाप्त हो गया।

रामानुजन की मृत्यु का समाचार डयूबजरी ने हार्डी को दिया। यह सुनकर हार्डी को गहरा आघात लगा। एक स्नेही, कुशाग्र व हंसमुख मित्र को उसने सदा के लिये खो दिया था। इस खबर से विश्व के समी विख्यात गणितज्ञों में दुख की लहर फैल गई क्योंकि वे एक अपार बुद्धि सामर्थ्य के प्रज्ञावान को हमेशा के लिये खो चुके थे।

रामानुजन के संबंध में कदाचित् यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह अत्यंत विद्वान व प्रखर बुद्धि का गणितज्ञ रुक्ष व लोगों को टालनेवाला रहा होगा किन्तु ऐसी बात नहीं थी। वह सदा इस बात के लिए प्रयत्नशील रहता था कि अपना घर सदा आनन्दमय व सुखी रहे। अपने माता–पिता, नानी, भाई, पत्नी व मित्र समी से उसका अपार प्रेम था। मां के लिये तो उसके मन में अपार आदर था। जिस समय वह गणित नहीं करता था उस खाली समय में वह सभी के बीच बैठकर गपशप करता था। कभी पुराणों में पढ़ी हुई कथायें सुनाता था तो कभी भूत–प्रेत के किस्से सुनाता था। कभी–कभी वह गणित की पहेलियां भी बुझाता था।

रामानुजन अत्यंत सादा व्यक्ति था। इतना अपार यश मिलने पर भी वह कभी गर्व से फूला नहीं। उसकी जन्मजात नम्रता जरा भी कम नहीं हुई।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का गणितज्ञ प्रो. हार्डी उसका घनिष्ट मित्र था। एक पत्र में प्रो. हार्डी ने लिखा है –

''रामानुजन को प्राप्त यश तथा उसके कार्य को मिली सर्वमान्यता अन्य किसी भी भारतीय गणितज्ञ को मिली होती तो वह फूला न समाता। किन्तु सत्य तो यह है कि रामानुजन बहुत महान व्यक्ति था। वह जैसा महान गणितज्ञ था वैसा ही महान इन्सान भी था।''

''अत्यन्त नम्र, सादा, सरल व स्वच्छ !''

जी.टी. नारायण राव

शोक संदेश

बिहार के गोपालगंज जिला अन्तर्गत भोरे निवासी स्व. राम जी प्रसाद बरनवाल के पुत्र और श्री डा. अवधेश प्रसाद बरनवाल (पत्नी श्रीमती डा. कामनी बरनवाल) के अनुज अखिलेश कुमार बरनवाल का निधन लगभग 70 वर्ष की आयु में दिनांक 09.11.2018 को हो गया। श्री अखिलेश जी कैंसर से पीड़ित थे और अपने पीछे एक पुत्र और पुत्रवधु, तीन पुत्री, एक पौत्र व एक पौत्री, दो नाती समेत तीन नातिन एवं तीन भाईयों का भरा पूरा परिवार छोड़कर चले गये हैं। आप खमरिया के श्री विमल कुमार बरनवाल के साला थे। इनका सुशिक्षित परिवार एवं अन्य सभी सगे संबंधी उनके आत्मा की शान्ति के लिये परमपिता परमेश्वर से कामना करते हैं तथा उनकी शोकाकुल पत्नी (शकुन्तला देवी) और परिवार के सभी लोगों को यह दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

जनार्दन प्रसाद बरनवाल
हॉस्पिटल रोड, मित्रा चौक
बेतिया, प. चम्पारण

वैवाहिक विज्ञापन के पात्र सम्बन्धी सूचना का अभिभावकगण अपने स्तर से पूरी तरह जांच कर संतुष्ट हो लें – सम्पादक

5/19

वधू चाहिए

मनीष कुमार, DOB 1989, 5'10", B.Tech. BPCL में Asstt. Manager के पद पर कार्यरत हेतु शिक्षित, गोरी एवं सुयोग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र प्रसाद, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9973059257

4/19

वधू चाहिए

Praveen Barnwal, 29, 5'7", fair, slim, Development Officer in L.I.C. (Asansol Divn.) looking for a suitable match (should be educated, fair & ht. 5'3"). Contact : Pramod Burnwal (elder brother) Raniganj (West Bengal) Mob. : 9832797578, 9332985087

6/19

वधू चाहिए

शोभित प्रिय, 32, 5' 7'', मांगलिक, स्मार्ट एवं आकर्षक सी.ए. फाइनल में तथा अपना निजी प्रेक्टिस हेतु मंगली, सुन्दर, सुयोग्य एवं शिक्षित वधू चाहिए। पिता श्री विजेन्द्र कुमार, माधोपुर, शेर कोठी, मुँगेर से फोटो बायोडाटा एवं कुण्डली के साथ संपर्क करें। मो. : 7007823317 मुँगेर, 7905335030 (लखनऊ)

2/19

वधू चाहिए

रवि कुमार बरनवाल, 30, 5' 9'', स्मार्ट, स्लिम, NIT - M.Tech., रेलवे में J.E. के पद पर कार्यरत हेतु संस्कारी, गृहकार्य दक्ष, कम से कम 5' 4'', लम्बी वधू चाहिए। संपर्क करें : फोटो बायोडाटा के साथ पिता सोहन लाल बरनवाल, गिरीडीह (झारखण्ड), मो. : 7549077259, 7091206558 (W.A.)

1/21

वधू चाहिए

Mukesh Burnwal, S/o Jay Prakash Burnwal, 27, 5' 9", fair, Chartered Accountant presently working as Asstt. Manager (Finance) in Eastern Coalfield Ltd. (ECL), of Kajora Bazar, Durgapur (W.B.), Contact No. : 9932363264

2/19

वधू चाहिए

मनोज कुमार बर्णवाल, 30, 5' 10'', गोरा, स्मार्ट, M.C.A., Ey बंगलुरु में साफ्टवेयर इंजिनीयर, T.L. के पोस्ट पर कार्यरत के लिये सुन्दर, सुशील एवं योग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : राजेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, दुर्गापुर (प.बंगाल), मो. : 9232091149, 8436191005

8/19

वधू चाहिए

कुणाल किशोर, 31, 5' 11'', गोरा, स्मार्ट, B.Tech. (Electronics) IIT खड़गपुर, बंगलोर में In-Mobi कं में उच्च पद पर कार्यरत, आकर्षक वेतन हेतु उच्च शिक्षित, लम्बी, गोरी, सुन्दर एवं कार्यरत वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता युगल किशोर, अपर आयुक्त (सेवानिवृत), झारखण्ड सरकार, राँची। मो. : 7461999661, 7461999665

2/19

वधू चाहिए

VIPIN ADHIR, 30, 5' 11'', स्मार्ट, B.Tech, वर्तमान में Sr. Software Engr. Amazon, Bangalore में कार्यरत हेतु सुन्दर, लम्बी (कम से कम 5' 4'') प्रोफेशनल वधू चाहिए। Software Engr. को प्राथमिकता। संपर्क करें : सत्यनारायण वर्णवाल, धनबाद, (झारखण्ड), मो. : 9973662744, 8409560401, 9431509455

2/19 **वधू चाहिए**

सुमित कुमार, 30, 5'8'', गोरा, स्मार्ट, होटल मैनेजर, अहमदाबाद में कार्यरत हेतु शिक्षित वधू चाहिए। मांगलिक को प्राथमिकता। फोटो एवं कुण्डली के साथ संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, पो.+जिला – जमुई (बिहार), मो. : 8210158990

2/19 अभिषेक कुमार, 28, 5' 8'', B.Tech, स्मार्ट, गोरा, Bank of Baroda में Asstt. Manager के पद पर भरुच, गुजरात में कार्यरत हेतु सुन्दर, शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता सुरेश प्रसाद, देवघर, मो. : 9334663084, 7250751754

2/19 प्रकाश कुमार, 30, 5' 7'', स्मार्ट, ग्रेजुएट, Successful Business हेतु सुयोग्य, शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करं : पिता जयकुमर बर्णवाल, दलसिंगसराय, जिला समस्तीपुर, मो. :8347606062, 7488944171, Email : pra.dena072@gmail.com

7/19 अमितेन्द्र बर्णवाल, 30, 5'10'', फयेर एवं स्मार्ट, असिस्टेन्ट पेशकार, झारखण्ड कोर्ट में कार्यरत हेतु फेयर, व्यूटीफूल एवं शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता राजेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, मुँगेर। मो. : 9016730875, 9835257981

2/19 राहुल कुमार बरनवाल, 30, 5' 10'', रंग गोरा, B.Com, GENPACT Co. Noida में अधिकारी हेतु लम्बी, गोरी, शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता अशोक कुमार बरनवाल, बैंक मोड़, धनबाद (झारखण्ड), मो. : 9523065709

3/19 **वधू चाहिए**

सचिन कुमार बरनवाल, 29, 5' 8'', गोरा, स्मार्ट, MBA, वर्तमान में तीन कम्पनियों का जिला वितरक हेतु सुन्दर, शिक्षित वधू चाहिए। फोटो, बायो डाटा के साथ संपर्क करें : पिता पवन कुमार C/o कैलाश प्रसाद, सोनार पट्टी रोड, नवादा (बिहार) मो. : 9304458829, 8877209588

3/19 शुभम, 30, 5' 10'', MCA (NIT रायपुर) पूणे में Sr. Software Engr. के पद पर कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित वधू चाहिए। Working को प्राथमिकता। संपर्क करें : अशोक कुमार बरनवाल, पो. नरहन (समस्तीपुर), बिहार, मो. : 9931469697, 9113190882

3/19 प्रियंक कुमार, 27, 6', स्मार्ट, B.Tech., (NIT Surathkal), MBA (IIM, Calcutta) Myntra, Banglore में Finance Manager के पद पर कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील, लम्बी, संस्कारी, गृहकार्य दक्ष Technical Degree प्राप्त वधू चाहिए। कार्यरत को प्राथमिकता। फोटो बायोडाटा, कुण्डली के साथ संपर्क करें : पिता प्रशान्त कुमार बर्णवाल, धनबाद, मो. : 8210356194, 9708582108

4/19 चेतन आनन्द, 29, 5' 9'', गेहुँआ, MBA, running own nursing home in Co-operative Colony, Bokaro & having own house at City Centre, B.S.City के लिये सुन्दर, सुशील, शिक्षित एवं गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए। पिता स्व. ओमप्रकाश Ex-Chargeman of BSL, संपर्क करें : जीजाजी संजीव कुमार बरनवाल, बंगलोर, मो. : 9008244713, चेतन आनन्द, बोकारो मो. : 9431379684

3/19 अभिषेक कुमार बर्णवाल, 26, 5' 6'', सुन्दर, स्मार्ट, B.Tech. IIT, गुवाहाटी, डायरेक्ट इं. कं. में Software Engr., आय छः अंकों में बंगलोर में कार्यरत एवं नीजी फ्लैट हेतु गोरी, सुन्दर, घरेलु, प्रोफेशनल वधू चाहिए। फोटो बायोडाटा के साथ संपर्क करें : पिता अरुण कुमार बर्णवाल, स्वराजपुरी रोड, गया मो. : 9504762251, 9110101188

4/19

वधू चाहिए

अंकेश, बी.टेक, 28, 6', गोरा एवं स्मार्ट, भारत सरकार के उपक्रम रेल विकास निगम लि. (RVNL) वर्तमान में पूणे में कार्यरत हेतु प्रोफेशनल वधू चाहिए। संपर्क करें : सत्यनारायण प्रसाद, SAIL बोकारो में कार्यरत। मो. : 9430756921, 9471783531

3/19

वधू चाहिए

Bipin Kumar, 5' 8", DOB 8.1.88, works at Civil Court as administrative officer cum Registrar, posted at Khagaria (Bihar), Home twon being Warisaliganj (Nawada), Bihar, need sushil sunder and educated bride. Contact : 7870808849, 9060217521

4/19

वधू चाहिए

कुमार सौरभ, 29, 5' 10'', स्मार्ट, आकर्षक, बंगलोर में Sr. Software Engr., Siemens कं. में कार्यरत हेतु लम्बी, गोरी, शिक्षित गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता बिन्देश्वरी प्रसाद बरनवाल, हिन्दुस्तान फार्मा ट्रेडर्स, नेताजी रोड, देवघर। मो. : 7903797138, W.A.No. 9431188607

4/19

वर चाहिए

कुमारी दिव्या, मंगली, 23, 5' 4'', गोरी, इन्टर, इकलौती संतान श्री लक्ष्मी नारायण, आजाद नगर, गोमो (धनबाद), हेतु सुयोग्य एवं संस्कारी शिक्षित वर चाहिए। जो ससुराल पक्ष को अवलम्बन प्रदान कर सके। संपर्क करें : लक्ष्मी नारायण, मो. : 9934546985, 9576104164

3/19

वर चाहिए

वैशाली बरनवाल, 25, 5' 5'', Fair, M.Com., कोलकाता से एवं दुर्गापुर में प्राईवेट जॉब हेतु IAS, IPS, Doctor, Engineer वर चाहिए। संपर्क करें : हरिहर प्रसाद बरनवाल, Business, गुरुद्वारा रोड, ऊखड़ा (बर्दवान), मो. : 9531712363, 8597797785

3/19

वर चाहिए

Kriti Kumari, 27, 5' 3", fair, beautiful, MBA (Finance) IBS Hydrabad, B.E. (Electric & Electronics) presently working as a Sr. Financial Analyst at SG Analytics Pune, is looking for an MBA, CA etc. Contact with biodata and photo to Ashok Kumar (Father), Sheikhpura (Bihar), Mob. : 9006587323, 8676016901, E-mail : akrita2311@gmail.com

4/19

वर चाहिए

अपर्णा कुमारी, पुत्री स्व. जयकिशन बरनवाल, फुसरो (बोकारो), 26, 5' 4'', गोरी, मंगली ग्रेजुएट, C.S. LLB. वर्तमान में कं0 सेक्रेटरी के पद पर बंगलोर में कार्यरत हेतु सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए। संपर्क करें : मौसा लक्ष्मी नारायण, मो. : 9576104164 तथा मामा प्रदीप कुमार, मो. : 9431323745

4/19

वधू चाहिए

Alliance invited for Shivangi Kumari, DOB 14.8.1990, fair, beautiful, well educated, M.Com 1st class from DSE (DU) & UGC NET qualified, presently working as Junior Accounts officer at BSNL, Katihar. Looking for a suitable well educated groom preferrably Doctor, Engineer (ONGC, NTPC, NHPC, Rly.) or employed as class 1 or 2 officer in Central Govt. Contact with Bio-data to Shambhunath Shah, Retd. Manager, PNB, Purnia, Mob. : 8789740044, 7667352552

6/19

वर चाहिए

डा. रचना भारती, DOB 27.07.1987, 5' 3'', सुन्दर, गोरी, स्मार्ट, गृहकार्य दक्ष MPT (NEURO) IP university, Delhi में सिनीयर फिजियोथेपिस्ट के पद पर कार्यरत हेतु सुयोग्य व शिक्षित वर चाहिए। संपर्क करें : सुरेन्द्र प्रसाद, स्वस्तिक मेडिकल हॉल, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9158927766

वर चाहिए

4/19

सोनी प्रिया बर्णवाल, 5'3'', D.O.B. 10.4.1993, fair, MA English, W.B. Govt. में प्राइमरी शिक्षक एवं पाण्डवेश्वर (प. बर्दवान) में कार्यरत हेतु सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : बिनोद कुमार बर्णवाल, मो. : 9475938563

होली मिलन समारोह 07.03.2018

दिनांक 07.03.2018 दिन बुधवार को बरनवाल सेवा समिति, बिल्थरा रोड (बलिया) द्वारा होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। यह समारोह सायं 5.30 बजे से प्रारम्भ हुआ। समारोह स्थल – बरनवाल धर्मशाला, बिल्थरा रोड। समारोह के मुख्य अतिथि – नगर पंचायत चेयरमैन श्री दिनेशक कुमार गुप्तजी।

यह होली मिलन समारोह बड़े ही भव्य तरीके से मनाया गया इस कार्यक्रम की तैयारी स्थानीय बरनवाल सेवा समिति के सदस्यों और अधिकारियों द्वारा लगातार कईहो बैठक करके बहुत ही कम समय में सबके सहयोग से की गयी। इस दिन बरनवाल सभागार को दुल्हन की तरह सजाया गया, अपने समाज के बच्चों ने अनेक कार्यक्रमों की तैयारी किया था जिसके लिए एक बड़ा मंच बनाया गया तथा आगन्तुकों, महिलाओं, बच्चों के बैठने हेतु गद्दा, कुर्सी आदि का बड़ा ही सुन्दर संयोजन किया गया था। इस समारोह का संचालन श्री संदीप कुमार बरनवाल द्वारा बड़े ही सुन्दर व रोचक तरीके से किया गया।

कार्यक्रम (बिन्दुवार) – सर्वप्रथम कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए मुख्य अतिथि चेयरमैन दिनेश कुमार गुप्त ने दीप प्रज्वलन कार्य बरनवाल समाज के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम बरनवाल व स्थानीय समिति के मंत्री श्री अनुपम जी बरनवाल के साथ व श्री जयप्रकाश बरनवाल प्रदेश मंत्री की उपस्थिति में किया तथा बरनवाल समाज के आदिपुरुष महाराजा अहिबरन जी महाराज के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए पूजन, वंदन किया गया।

महाराज अहिबरन जी के माल्यार्पण के बाद मुख्य अतिथि का स्वागत जिलाध्यक्ष बरनवाल सेवा समिति श्री राजेन्द्र जी बरनवाल, श्री ओमप्रकाश बरनवाल (उपाध्यक्ष), श्री कृष्णा बरनवाल (कोषाध्यक्ष), श्री त्रिभुवन जी बरनवाल, श्री अनिरुद्ध जी, मोहन जी (पूर्व अध्यक्ष), श्री मुरली बरनवाल, लल्लन बरनवाल आदि ने माला पहनाकर किया। दीप प्रज्वलन के समय अपने समाज के बच्चों ने भी वन्दना प्रस्तुत किया जिसमें श्रेया, श्रुति, श्रेयांश, कानहा ने सहभाग किया।

इसके बाद कार्यक्रम में उपस्थित सभी व्यक्तियों ने एक दूसरे को अबीर गुलाल का तिलक लगाया और गले मिलकर एक दूसरे को बधाई दिया।

इस समारोह में कृष्ण व राधा रुप सज्जा प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था जो कि इस समारोह का मुख्य आकर्षण भी साबित हुआ इसमें अपने ही समाज के नन्हें–मुन्ने बच्चों द्वारा बाल कृष्ण की अत्यन्त ही मनमोहक झाँकी प्रस्तुत की गयी। भगवान के इस रुप का उनकी माताओं की ओर से आरती भी किया गया जिसने वहाँ उपस्थित सभी लोगों को भाव–विभोर भी कर दिया व मुख्य अतिथि द्वारा भी बाल कृष्णों की आरती की गयी।

इसके अलावा एक गुब्बारा फोड़ कार्यक्रम भी प्रदर्शित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के अलावा अन्य मंचासीन पदाधिकारियों अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम जी, महामंत्री श्री अनुपम जी बरनवाल, प्रदेश बरनवाल सभा मंत्री श्री जयप्रकाश जी ने मंच से गुब्बारा फोड़ा और यह गुब्बारा फूटते ही मंचासीनों पर अबीर–गुलाल पड़ गया। इस प्रकार सम्मानीय बरनवाल समाज ने अभिवादन की अनोखी मिसाल प्रकट किया।

समारोह के मुख्य अतिथि नगर के चेयरमैन श्री दिनेश कुमार गुप्त ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि होली का पर्व आपसी भाईचारा को मजबूत करने व पुरानी दुश्मनी को दोस्ती में बदलने का संदेश देता है। बहुत

अच्छा लगा कि बरनवाल समाज ने अपनी एकजुटता को प्रदर्शित करते हुए, एक साथ मिलकर होली मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया है। ऐसे कार्यक्रमों से आपसी व सामाजिक एकता मजबूत होती है। उन्होंने अपने को बरनवाल समाज का ऋणी बताया और कहा कि स्थानीय बरनवाल समाज तो मुझे हमेशा अपना आशीर्वाद देता आया है और यह मेरे अपने घर के जैसा है। साथ ही उन्होंने कहा कि बरनवाल समाज का यथासम्भव मैंने सहयोग किया है और आगे भी मुझे जो प्रस्ताव यह समाज देगा उसे पूरा करने का भरोसा देता हूँ। आगे सभी लोगों को होली की शुभकामना देते हुए उन्होंने बच्चों के द्वारा प्रस्तुत किए गये सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सराहना किया और कहा कि बच्चों को ऐसे कार्यक्रमों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए और होली के त्योहार से सीख लेकर अच्छाई का साथ देना चाहिए। होली के बाद रामनवमी का त्योहार व अपने साथ हिन्दू नववर्ष भी आ रहा है, हमें इसे धूम–धाम से मनाना चाहिए।

इसके बाद बरनवाल सेवा समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री मोहन जी बरनवाल और श्री जयप्रकाश जी बरनवाल प्रदेश मंत्री ने अपने विचार रखते हुए होली की शुभकामनायें सबको दिया और कुछ हास्य–व्यंग्य भी प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् बरनवाल समाज के होनहार बच्चों ने अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जिसमें प्रमुख कार्यक्रम निम्न है – भजन, देवी गीत, केशव वन्दना, दहेज प्रथा के विरोध में गीत, नृत्य नाटिका (कन्या भ्रूण हत्या पे), देशभक्ति गीत, वन्दे मातरम् डांस, सामूहिक कैसेट डांसएवं होली आधारित गीत की प्रस्तुति काफी रोचक रही। साथ ही अन्य बच्चों ने भी अपने कविता, कहानी, चुटकुला के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

उपरोक्त कार्यक्रमों में प्रतिभाग लेने वाले बच्चों के नाम निम्न है – स्वास्तिका, कली, अनुष्का, अणिव, सानिया, ईशा, श्रेया, ईशिता, श्रेया व शालू (राधाकृष्ण नृत्य), साक्षी, काव्या, कान्हा, न्यासा, प्रियांशु, हिमांशु, प्रखर, श्रुति, रिया, निशा आदि प्रमुख रहे।

बाल कृष्ण रुप सज्जा के प्रतिभागी – बालकृष्ण रुप सज्जा प्रतियोगिता में भाग लेने वालों में बच्चे प्रमुख है – अर्णव बरनवाल, कान्हा बरनवाल, स्वर बरनवाल, श्रेयांश बरनवाल, काव्या बरनवाल, शिवम बरनवाल

स्थानीय बरनवाल समिति के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम जी बरनवाल ने होली पर्व व उसकी विशेषता पे विस्तार से चर्चा किया और होली मिलन समारोह को सफल बनाने हेतु सभी स्थानीय पदाधिकारियों, सहयोगियों, नवयुवकों और सभी बरनवाल बन्धुओं के प्रति अपना आभार व्यक्त किये।

समारोह में विभिन्न स्थानों से आये हुए कवियों ने अपनी प्रस्तुति देकर चार चाँद लगा दिये जिनमें जितेन्द्र जी स्वाध्यायी, रामनगीना जी, अरशद हिन्दुस्तानी और श्री अनिरुद्ध जी बरनवाल (परसिया) शामिल रहे।

समारोह में मुख्य अतिथि को उपहार स्वरुप स्मृति चिन्ह के रुप में बरनवाल समाज व यौधेयगण के प्रवर्तक महाराज़ा अहिवरन जी का फ्रेम किया हुआ सुन्दर चित्र दिया गया। इस मौके पर श्री राजेन्द्र जी बरनवाल जिलाध्यक्ष, श्री कृष्णाजी बरनवाल, कोषाध्यक्ष, श्री ओम प्रकाश जी बरनवाल उपाध्यक्ष, मोहन जी बरनवाल (पूर्व अध्यक्ष), प्रदेश मंत्री जयप्रकाश जी पत्रकार, पुरुषोत्तम जी अध्यक्ष (स्थानीय समिति), श्री अनुपम जी बरनवाल मंत्री (स्थानीय समिति), मुरली प्रसाद जी,त्रिभुवन जी बरनवाल, अनिरुद्ध जी बरनवाल, श्री योगेश्वर प्रसाद जी, श्री संजय बरनवाल जी, लल्लन बरनवाल जी, चन्द्रकान्त बरनवाल जी, गोपाल जी, रमेश जी, घनश्याम जी, राजेश जी, अशोक जी, सुरेश बरनवाल जी, श्री रामविलास बरनाल आदि उपस्थित रहे और अपना सहयोग दिया।

समारोह के अंत में सभी आगन्तुकों के बरनवाल सेवा समिति, बिल्थरा रोड की तरफ से प्रसाद के तौर पर सुस्वादु रात्रि भोजन की व्यवस्था की गयी थी।

इस तरह बरनवाल सेवा समिति द्वारा आयोजित होली मिलन का कार्यक्रम हँसी–खुशी परिपूर्ण हो गया।

अनुपम कुमार बरनवाल
महामंत्री
बरनवाल सेवा समिति
बिल्थर रोड (बलिया) उ.प्र.

बरनवाल सेवा समिति, सीवान द्वारा आयोजित महाराजा अहिबरन जंयति–सह–वार्षिक समारोह का प्रतिवदेन

बरनवाल सेवा समिति, सीवान द्वारा दिनांक 13 जनवरी 2019 को सीवान जिला मुख्यालय में महाराज अहिबरन जयंति समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह का उद्घाटन श्री शारदा प्रसाद बरनवाल (पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), अखिल भारतीय बरनवाल वैश्य महासभा), श्री गोपाल जी बरनवाल, श्री भृगुनाथ प्रसाद गुप्ता, अधिवक्ता, आयकर अधिवक्ता ज्ञान प्रकाश एवं श्री सरोज बरनवाल ने संयुक्त रुप से दीप प्रज्जवलन कर किया। श्री शारदा प्रसाद बरनवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि महाराजा अहिबरन उत्तरप्रदेश के बरन प्रदेश के पराक्रमी राजा थे एवं हम बरनवालों के पूर्वज थे। प्रत्येक वर्ष हम उनकी स्तुति एवं वन्दना करते है एवं उनके बताए पद चिन्हों पर चलने का संकल्प लेते हैं। बरन प्रदेश को वर्तमान में बुलन्दशहर के नाम से जाना जाता है।

आयकर अधिवक्ता ज्ञान प्रकाश ने अपने संबोधन में कहा कि महाराजा अहिबरन ने हमारे समाज को संगठित किया। आज हमारा समाज मुख्य रुप से व्यापार/ व्यवसाय से जुड़ा है लेकिन शिक्षा को बिना अपनाए हमारा विकास नहीं हो सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी हमारे बच्चे कीर्तिमान स्थापित कर रहे है लेकिन राजनीति में हमारी भागीदारी नगण्य है। आज राजनीतिक क्षेत्र में भी हमें अपनी पहचान बनानी होगी एवं अपना वाजिव हक हासिल करना होगा।

समारोह को श्री गोपाल जी बरनवाल, श्री ज्योति प्रकाश बरनवाल, श्री शशिभूषण बरनवाल, श्री सुधीर कु. बरनवाल, श्री भगवतिशरण बरनवाल, सीमा देवी आदि अनेक वक्ताओं ने अपने उद्बोधन से समाज को प्रेरित एवं जागरुक किया।

उक्त अवसर पर समाज के बच्चों के लिए अनेक तरह के सांस्कृतिक एवं प्रतियोगी कार्यक्रमों यथा– भाषण, नृत्य, गीत, मेंहदी रचना, क्विज कांटेस्ट, महिलाओं के लिए कुर्सी दौड़ आदि का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रंतिभागियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिया गया एवं अन्य प्रतियोगियों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

स्वागत गीत का प्रस्तुतीकरण – सुश्री तृप्ती कुमारी, प्राची, अंशिका, प्रगति, नेहा एवं मानसी कुमारी ने अपने मधुर कंठों से किया और उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

(1) भाषण प्रतियोगिता के उत्कृष्ट प्रतिभागियों के नाम – सोमी कुमारी बरनवाल प्रथम, वर्षा वरनवाल द्वितीय, अभिषेक आर्य तृतीय (2) क्विज कांटेस्ट – आर्यन कुमार प्रथम, यशराज कुमार द्वितीय, प्राची रानी बरनवाल तृतीय (3) गीत/संगीत/कविता एवं भाषण प्रतियोगिता – प्रिंस बरनवाल प्रथम, राप्तिक बरनवाल द्वितीय, आर्यन बरनवाल तृतीय (4) मेंहदी प्रतियोगिता – शिवानी बरनवाल प्रथम, प्रगति वरनवाल द्वितीय, शिल्पी बरनवाल तृतीय (5) नृत्य प्रतियोगिता (वरिष्ठ) – प्राची बरनवाल प्रथम, नेहा बरनवाल द्वितीय, घूमर बरनवाल तृतीय (6) नृत्य प्रतियोगिता (कनिष्ठ) – अंशिका बरनवाल प्रथम, न्यासा वरनवाल द्वितीय, तृप्ती बरनवाल तृतीय (7) कुर्सी दौड़ प्रतियोगिता (महिला) – वर्षा देवी बरनवाल प्रथम, प्रियंका देवी बरनवाल द्वितीय, उर्मिला देवी बरनवाल, तृतीय

बरनवाल सेवा समिति, सीवान की अगले दो वर्ष के कार्यकाल हेतु सर्वसम्मति से पदाधिकारियों का चयन किया गया जो निम्नवत है –

1. श्री भृगुनाथ प्रसाद गुप्त, संरक्षक 2. श्री शारदा प्रसाद बरनवाल, अध्यक्ष 3. श्री ज्ञान प्रकाश, उपाध्यक्ष 4. श्री सरोज कुमार बरनवाल, उपाध्यक्ष 5. श्री

राजेश कुमार विद्यार्थी, सचिव 6. श्री अनूप कुमार, उपसचिव 7. श्री संजय कुमार बरनवाल, उपसचिव 8. श्री कृष्णकांत बरनवाल, संगठन मंत्री 9. श्री राजेश गोयल, कोषाध्यक्ष 10. श्री शैलेश कुमार बरनवाल, कार्यकारिणी सदस्य 11. श्री राजेश बरनवाल, कार्यकारिणी सदस्य 12. श्री परमेश्वर जी बरनवाल, कार्यकारिणी सदस्य 13. श्री कपिलदेव प्र. बरनवाल, कार्यकारिणी सदस्य 14. श्री संदीप बरनवाल, कार्यकारिणी सदस्य 15. श्री मृत्युंजय बरनवाल, कार्यकारिणी सदस्य 16. श्री विकास बरनवाल, कार्यकारिणी सदस्य 17. श्री शशिप्रकाश बरनवाल, कार्यकारिणी सदस्य

उपरोक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री भृगुनाथ प्रसाद गुप्त, अधिवक्ता ने की एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री राजेश कुमार विद्यार्थी ने किया।

आज के कार्यक्रम की सफलता के लिए श्री राजेश कुमार विद्यार्थी, श्री राजेश गोयल, श्री कृष्णकांत बरनवाल, श्री संजय कुमार बरनवाल एवं श्री अनूप कुमार (सभी युवा) ने सक्रिय भूमिका निभाई। इनके उत्साह एवं संक्रियता को देखते हुए श्री शारदा प्रसाद बरनवाल ने अपनी तरफ से

विशेष उपहार देकर इन सभी को सम्मानित किया।

श्री राजेश कुमार विद्यार्थी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि कार्यक्रम के आयोजन में श्री शारदा प्रसाद बरनवाल एवं श्री ज्ञान प्रकाश बरनवाल का आरम्भ से ही हम युवाओं को मार्गदर्शन मिलता रहा। यदि इनका मार्गदर्शन नहीं मिलता तो यह कार्यक्रम को अपेक्षित सफलता नहीं मिलती।

कार्यक्रम की समाप्ति सीवान एवं गोपालगंज जिला के लगभग 500 से अधिक बरनवाल बंधुओं के सामूहिक सुरुचि भोजन के साथ समाप्त हुआ।

राजेश कुमार विद्यार्थी
सचिव
बरनवाल सेवा समिति, सीवान

चुनावों के बाद भी

संगठन बना के कोई, जीत तो सकता है मगर
राजनीति में लेकिन, मित्रों को झेलना मुश्किल
तात्कालिक लाभ के कारण, एकजुट होते हैं सभी
तास के पत्तों जैसी, बिखर जाते हैं दोस्तीं इनकी।
क्षणिक गठजोड़ पे, होता न इतराना अच्छा
सामयिक उत्तेजना पर, विश्वास को विश्वास नहीं
जनता चाहती है कार्य, कर्णधारों से हमेशा
मात्र वह ही टिक सकेगा, कसौटी पे उतरे जो खरा।
धनबल व शक्ति से केवल, सत्ता तो भले मिल जाती
देश की जनता का प्यार, विश्वास कभी है न मिलता
इस गरीब राष्ट्र की, भगवान ही मालिक हैं सदा
भुखमरी, कुपोषण व रोग से, बचाये कौन जनता को ?
झूठे वादों से ठगोगे, कब तक अवामों को अपने
देना पड़ेगा तुमको हिसाब, पाँच वर्षो का इन्हें
भरोसे की डोर होती, कमजोरी बड़ी यह जानो
टिके रहना है यदि तो, खरे उतरो उम्मीदों पर।
सत्ता तो मिलेगी कार्य पर ही, पुनः देश में लेकिन
सुधारों सारे तंत्र को, समृद्धियों से चुन–चुनकर
कार्य अच्छे किये तुमने तो, सराहेंगे बार–बार तुम्हें
सर आँखों पे बिठायेंगे, चुनावों के बाद भी।

मोहन प्रसाद बरनवाल
उखरा–वर्द्धमान

पूर्ण कुंभ में पुण्य

इलाहाबाद शहर पूर्ण कुंभ में पुण्य की खोज में उन्माद की चोटी पर था। शहर क्या महामानव समुद्र बन गया, प्रयाग में मकर संक्रान्ति स्नान के लिये देश–विदेश से लाखों तीर्थयात्री आ रहे थे।

इलाहाबाद पहुँचने पर सुना गया कि 14 जनवरी मकर संक्रान्ति से लेकर मौनी अमावस्या, महाशिवरात्री, होलिकोत्सव श्रीपंचमी, रामनवमी तक स्थान का विशेष महत्व है।

2007 के पूर्ण कुंभ में मकर संक्रान्ति के अवसर में एक करोड़ से अधिक लोगों ने संगम में स्थान किया था।

किसी भी कुंभ में सिर टिकाने के लिये स्थान मिलना सबसे कठिन है। किन्तु भारत सेवाश्रम संघ के स्थानीय अध्यक्ष प्रभासानन्दजी ने मेरी समस्या हल कर दी। मकर संक्रान्ति के एक सप्ताह पहले से एक महीने पश्चात तक मेरे रहने और भोजन की व्यवस्था हो गई।

इलाहाबाद मोरी मार्ग से कई बीघा जमीन पर भारत सेवाश्रम संघ का कैंप था। मोटे कपड़े के तंबू के अंदर बिचाली की मोटी तह बिछी थी, जिस पर मोटे तोशक रखे थे। तोशक के बगल में मोटा कंबल भी था। कई सौ तीर्थ यात्रियों के लिये यह व्यवस्था की गई थी न जाने क्यों उस दिन ब्राह्म मुहूर्त के पहले मेरी नींद टूट गई। ठंड भी खूब पड़ रही थी। उस मोटे तंबू को भेदकर ओसकण विछावन में प्रवेश कर रहे थे। बिछावन भींग कर खराब हो रहा था। खैर आश्रम के नल से मैं मुँह धोकर बाहर निकला। सिर पर तारों भरा आकाश था। शुक्र तारा चमक रहा था मेला प्रांगण में भक्ति के संगीत बज रहे थे। कंधे पर कपड़े की थैली थी। भारत सेवाश्रम संघ के कैंप से मैंने मोरी मार्ग की ओर कदम बढ़ाये। रास्ते के किनारे बिचाली की छावनी में एक ग्रामीण महिला चाय बनाने की व्यवस्था कर रही थी। मैंने भी चाय पी इसने बड़े टॉनिक का काम किया। मेरे पीछे चार पाँच ग्रामीण महिलायें आ रही थी। एक ने पूछा संगम किधर है। मैंने कहा मैं भी उधर ही जा रहा हूँ। उनकी आपसी बोली से समझ मैं आया वे गोमो के गुनघुसा गाँव से आई है। खट कर खाने वाली इन महिलाओं के पास पर्याप्त वस्त्र भी नहीं थे। इन्हें देखकर मुझे अपने पर लज्जा आई। दो मोटा फूल स्वेटर, ऊनी पाजामा अंदर में इनर सिर पर ऊनी टोपी और मफलर लिये था। 15 मिनट पैदल चलने के बाद बाई ओर एक चाँड़ा पिच का रास्ता है, जो ढालू होकर बालू के पथ पर मिला है। इस मार्ग का नाम कालीमार्ग है। काली मार्ग से संगम दो किलोमीटर है। संगम तट पर पहुँचने के लिये विशेष श्रम की आवश्यकता नहीं पड़ी। कलकल करती गंगा और संग में यमुना शोभायमान थी। दोनों नदियां स्रोतास्विनी थी किन्तु सरस्वती नदी रहस्य मयी थी। पूर्व आकाश में लालिमा थी। कुछ समय पश्चात सूर्योदय हो गया। संगम तट पर एक सुन्दरी सन्यासिनी को ध्यान मुद्रा में देखा। अचानक याद आया इस मुखमुद्रा वाली महिला को पहले भी कभी देखा है। शायद तीन वर्ष पूर्व हरिद्वार अर्धकुंभ में। शाम का समय था गंगाजी की आरती हो रही थी। भीड़ अपरंपार थी। उस समय एक मां का अपनी छोटी बेटी से हाथ छूट गया। माँ अंजली, अंजली चिल्ला पड़ी उस बच्ची को मैंने उठा लिया। चार साल की छोटी बच्ची थी। माँ ने उसे मेरे पास देखकर आभार माना। परिचय हुआ उनके पति दिल्ली में पीडब्लयूडी में इंजिनियर थे। दो बच्चे थे जिसमें एक पुत्र और एक पुत्री थी। अपना फ्लेट था और सोने का संसार था। उनका नाम याद था। मैंने कहा क्या मैडम अनुप्रिया यह रूप कैसा ! हाँ अरबिन्द जी कह कर वह जाने लगी। मेरे जोर देकर

पूछने पर उन्होंने कहा लगभग एक वर्ष पहले की बात है एक कार एक्सीडेन्ट हुआ। कार पति चला रहे थे अचानक उल्टे तरफ से पगलायी हुई ट्रक ने सबकुछ छीन लिया। वे सिर्फ बच गई। आत्महत्या करना चाहा पर नहीं हुआ। गुरूमाता ने संन्यास की दीक्षा दिलवाई। अब मैं अनुप्रिया नहीं धर्मशीला गिरि हूँ। उनकी आँखे डबडबा गई। किन्तु वो बोली मैं रोती नहीं, सन्यासी नहीं रोते है। लेनिक अनुप्रिया मैडम भी तो हाड़–मांस की बनी थी। मेरे पास शब्द नहीं थे कि उन्हें सांत्वना देता, कुछ दूर बाद हमारे मार्ग अलग हो गये।

किस प्रकार एक महिला संन्यासी बनती है यह प्रक्रिया बहुत कठिन है। पहले के द्वारा महिलाओं को संन्यास जीवन की जानकारी दी जाती है।

12 जनवरी शनिवार को मेरा सारा समय संगम घाट पर विभिन्न शिविरों तथा जूना अखाड़े में बीता। इस बार जूना अखाड़ा में ही 100 से अधिक महिलायें संन्यास ग्रहण करने वाली थी। जूना अखाड़ा की श्रद्धेय महन्त पूण्यात्मा गिरि से परिचय हुआ उन्होंने कहा तो आप पत्रकार है। मैंने कहा थोड़ा बहुत लिखता हूँ। वे बोली क्या आप कुंभ के उपलक्ष में कुछ लिखेंगे। मैंने कहा इस संबंध प्रत्येक दिन एक पृष्ठ लिखकर अखबार में भेज देता हूँ। वो बोली मैं किस प्रकार अपकी सहायता कर सकती हूँ।

मैंने कहा महिला एवं संन्यास के संबंध में कुछ जानता चाहता हूँ। इस संबंध में विशेष बाते नही बोली जा सकती फिर भी मैं कुछ बाते आपको बताऊंगी। प्रकृत ज्ञान और मंत्र ज्ञान के साथ – साथ गुरूदेव संन्यासिनी को जीवन शैली, संस्कार, खान–पान, चलने फिरने के संबंध में विस्तृत रूप से बताते हैं। मूलवस्तु त्याग है। परिवार, संपत्ति त्याग, कुटुंब संबंधी त्याग, मित्र त्याग, ये सारे त्याग संन्यासिनी के लिये आवश्यक है। इसके अतिरिक्त काम, क्रोध, लोभ, मोह से कितना दूर रहा जाय इसकी शिक्षा गुरूदेव देते है। सके अतिरिक्त गुरूदेव चोटी (जटा बन्धनी) गेरूआ वस्त्र, रूद्राक्ष, विभूति और यज्ञोपवीत संन्यासी को प्रदान करते है।

मेरे पीछे और लोग पुण्यात्मा गिरि से साक्षात्कर हेतु खड़े थे। मैं जाने को हुआ। इशारे से मुझे प्रसाद ग्रहण करने को कहा। मैं कृत्य हो गया। प्रसाद में फल और गेंदे की माला थी। उस दिन ढाई बजे मैं शिविर पहुँचा। देर होने से सम्मिलित भोज से वंचित हो जाता। चावल, चने की गाढ़ी दाल, कुम्हड़े की मिक्स सब्जी और चटनी थी। साथ में गाढ़ी खीर थी। कोई भी व्यक्ति बिना खाये न जाय ऐसा अध्यक्ष को आज्ञा थी 12 जनवरी तक जितने यात्री पहुँचे उससे स्पष्ट था कि 14 जनवरी को एक करोड़ से उपर पुण्यार्थी प्रयाग आयेंगे।

इस कुंभ में कितने पति पत्नी का विच्छेद हो गया। कितने पिता पुत्र की खोज में छाती पीट रहे थे। कितनी माताएँ अपनी बेटी और बेटों को पागलो की तरह खोज रही थी। इस भीड़ में कौन किसको मिलता है।

13 जनवरी रात बीतने पर मकर संक्रान्ति स्थान हेतु संघ के 500 लोग, 4 एवं 5 गाइड सहित जाने को तैयार थे। विभिन्न अखाड़ों के तंबुओं के जुलूस देखने के लिये लोगों की भारी भीड़ थी। अर्धकुंभ हो या पूर्ण कुंभ नागा लोग ही स्थान पर्व को नियंत्रण करते है।

संन्यासी अखाड़े क्रमानुसार निम्न है। (1) श्री अखाड़ा पंचायती महानिर्वाणी (2) श्री तिरंजनी अखाड़ा और आन्नद अखाड़ा (3) श्री जूना अखाड़ा, श्री आवाहन अखाड़ा और श्री पंचानि अखाड़ा।

सुबह 4 बजे से 8 बजे तक संन्यासियों का महास्नान सुबह 8 बजे से 12 बजे दोपहर तक वैष्णवों का स्नान दोहपर 12 बजे से 4 बजे तक उदासीन संप्रदाय के अधीन था।

मंकर संक्रान्ति का प्रथम शाही स्नान संक्रान्ति

के दिन रात्रि 12 बज कर 31 मिनट 39 सेकेण्ड के बाद आरंभ होता था।

सेवाश्रम प्रांगण में एक वृद्धदंपत्ति के दर्शन हुआ। पति लगभग 80 वर्ष के थे पत्नी समकक्ष थी। मजाक में पुछा गया वे रात में कैसे स्नान के लिये निकलेंगे। दोनों के पास एक – एक लाठी थी दोनों ने कहा लाठी ठोकते–ठोकते हमलोग संगम तक पहुंच जायेंगे।

मकर संक्रान्ति के काल के संबंध में गणना है कि नव वृहस्पति वृष राशि में और चन्द्र, सूर्य मकर राशि में है तो उस समय प्रयाग में अमावस्या में महापर्व कुंभ का योग होता है। महासाधक गण कहते है कि पूर्ण कुंभ योग में देवतागण पृथ्वी के प्रयास भूखण्ड में अवतीर्ण होते हैं। हिमालयवासी प्राचीन ऋषि मुणिगण सूक्ष्म देह अवलंवन करके संगम में अवतरण करते हैं।

जूना अखाड़े से होकर 15–20 मिनट के पथ में त्रिवेणी मार्ग है। प्रत्येक अखाड़ा कई एकड़ में वसा है। प्रतयेक अखाड़े में साधुओं की पंक्ति वद्ध कुटीर है। स्वच्छ और सन्दर। प्रत्येक कुटीर के सामने त्रिशुल गड़ा है। त्रिशुल की चोटी पर रूद्राक्ष की माला लपेटी है। प्रांगण में पेड़ की मोटी डाल प्रज्वलित है जिसके चारों और घुनी रमाते ध्यान मग्न साधु हैं।

मढ़ी का अर्थ है नियोग केन्द्र यहां एक साधु का जीवन प्रारंभ होता है। इसी नदी के माध्यम से आदि गुरू शंकराचार्य प्रतिष्ठित श्रृंगेरी गोवर्द्धन, योशीमठ और शारदा पीठ है। स्नानार्थी सुरक्षित रहे इसके लिये संघ के 300 स्वयंसेवक तट पर थे। खाली फुलपैन्ट, पीला फुल सर्ट गेरूआ वैज और सिर पर टोपी। अधिकांश स्वंयसेवक शिक्षित थे। अर्थोपार्जन का कोई सुयोग नहीं था सिर्फ जाते वक्त संघ से प्रशंसा पत्र।

पूर्ण कुंभ की महत्ता विचार करने पर सर्वप्रथम प्रयाग, द्वितीय हरिद्वार, तृतीय नासिक और चतुर्थ उज्जैन है। रात में भोजन उपरोक्त कह दिया गया कोई भी अपने साथ मूल्यवान वस्तु संगम तक नहीं ले जायेगा। एक – एक पैकेट में अपनी वस्तुएँ नाम लिखकर एक बड़े संदूक में रख देंगे। इसकी चाभी अध्यक्ष के पास रहेगी। मेरे शरीर पर स्वेटर, टोपी पाजामा थे किन्तु तीव्र ठंड के आगे इनका कोई मोल नहीं था। हाथ में गंगाजल घर ले जाने के लिये जरीकेन था। संघ में 5 कर्मचारी हमारे साथ थी। हमारी भीड़ 500 के लगभग थी। जाते समय वैरागी नाच रहे थे और गा रहे थे। अमृतकलश छलक रहा है, अहं का वलय टूट रहा है, वासना, उपासना में तवदील हो रही है। संगम घाट पर कुछ युवतियां छोटे वच्चों के साथ वैठी थी। एकाध को अपने शिशु को दुग्धपान कराते देखा।

यह देख मन में साहस आया संगम में ज्वार के समय मां गंगा का स्मरण करते हुए डुवकी लगाई। मेरे पाप धुले कि नहीं मैं नहीं जानता किन्तु एक अद्भूत शान्ति लाभ हुई। मैंने अपना जरीकेन पहले भर लिया था कपड़े वदले।। संगम तट पर एक लंवा व्यक्ति वोतल में मुंह में कुछ डालते दिखाई दिया। पूछने पर पता चला कि वह सुन्दरवन का मधु मुख में डाल रहा था। कोई इसका शरीर में सरसों का शुद्ध तेल मालिश कर रहा था। खैर जिसका जैसा विचार। लौटने वक्त पता चला कि मौन अमावस्या स्नान का और भी पुण्य है। किन्तु में और सर्दी नहीं सह पा रहा था। दोपहर में भोजन उदासी अखाड़े में किया और निज स्थानों को लौटा। वर्तमान में जव मानव मानव में मनोमालिन्य वढ़ रहा है। कुंभ हमारे सकुंचित मन को प्रसारित करता है। कुंभ का अर्थ है विभिन्नता में एकता।

अंत में मां गंगा को प्रणाम कर संघ के अध्यक्ष और अन्य सदस्यों को शुभेच्छा जना कर में स्वस्थान को प्रेरित हुआ।

अरविन्द कुमार बरनवाल
भूतपूर्व शिक्षक, आसनसोल

अनुभूत योग–माला

घरेलू दवाइयाँ

गंज – 1. बुढ़ापे का गंज–रोग ठीक नहीं होता। जवानी में गंज हो जाए तो हाथी–दाँत की राख में रसौंत और बकरी का दूध मिलाकर मलें।

2. आम के अचार का तेल (कम–से–कम एक वर्ष पुराना) प्रतिदिन सिर पर मलने से गंज–रोग दूर हो जाता है।

गर्मधारक योग – गोरोचन 3 ग्राम, गंजपीपल 10 ग्राम, असगन्ध 10 ग्राम, तीनों को बारीक कूट पीसकर चूर्ण कर लें। ऋतुस्नान के पश्चात चौथे दिन से 5 दिन तक प्रयोग करें, तत्पश्चात् गर्माधान करें, अवश्य पुत्र उत्पन्न होगा।

गर्भाशय की वृद्धि – 25 ग्राम तिलों को कूटकर आधा किलो पानी में औटाएँ। जब चौथाई रह जाए तब उतारकर छान लें। इसमें 6 ग्राम गुड़ और 4 ग्रेन हींग मिलाकर मासिकधर्म के पहले और दूसरे दिन दें। तीसरे दिन भी दे सकते हैं, परन्तु चौथे दिन नहीं। उसके प्रयोग से गर्भाशय की वृद्धि हो जाती है।

गुह्यंजनी (गुहेरी) – 1. इमली के बीजों की गिरी का पत्थर सा सिल पर चन्दन की तरह घिसकर गुह्यंजनी पर लगाएँ। श्रेष्ठ दवा है।

2. लवंग को जल में घिसकर लगाएँ।

गुध्रसी (शियाटिका) – आँबा हल्दी चूर्ण 6 ग्राम, मैदा लकड़ी चूर्ण 6 ग्राम, गौ का घी 12 ग्राम, मिश्री 12 ग्राम, दूध 250 ग्राम, जल 250 ग्राम। सब चीजों को जल तथा दूध में डाल–कर उबालिए। जब पानी जल जाए, दूध की ही मात्रा बाकी रह जाए तो उतारकर साफ पतले कपड़े से छान लें और कवोष्ण (कुनकुना) ही रोगी को पिला दें।

गैस–ट्रबल – अदरक का रस 6 ग्राम, नींबू का रस 6 ग्राम, शुद्ध मधु (शहद) 6 ग्राम, इन तीनों को खूब मिलाकर दिन में चार बार चटाएँ।

घाव – 250 ग्राम सरसों का शुद्ध तेल लेकर उसमें कांपिल्य (कमीला) 30 ग्राम मिलाकर इतना खरल कीजिए कि रंग काला हो जाए। इसको लगाने से घाव भर जाता है और सूख जाता है।

चम्बल (एग्जीमा) – पुनर्नवा (साठी) की जड़ 125 ग्राम लेकर उसे सरसों के शुद्ध तेल में मिलाइए। इसमें 50 ग्राम सिन्दूर मिलाकर मरहम बना लीजिए। 15 दिन लगाने से चम्बज दूर हो जाता है।

चश्मा छुड़ाने का उपाय – शतावर का चूर्ण करके से पतले (बारीक) कपड़े में छान लीजिए। इसकी 3 ग्राम मात्रा लेकर प्रातःकाल गुनगुने दूध के साथ फाँक लीजिए। इससे आँखों के प्रत्येक अंश, हर मांसपेशी में शक्ति आ जाएगी, दृष्टि शक्ति बढ़ेगी। तीन मास लगातार सेवन करने से चश्मा छूट जाएगा, अर्थात् ऐनक लगाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

छपाकी (शीतपित्त) – अजवायन और गन्धक 5–5 ग्राम लीजिये। इन दोनों को कूट–पीसकर कपड़छन कर लीजिए। प्रातः नाश्ते के साथ इस चूर्ण को एक ग्राम लेकर 1 ग्राम मधु (शहद) में मिलाकर चाटिए। अब्बल तो एक ही दिन में, अन्यथा 5 दिन में तो अवश्य ही छपाकी समाप्त हो जाएगी।

छाजन, पामा, चम्बल – कागजी नींबू का रस 50 ग्राम लीजिए। उसे किसी कांच (शीशे) के प्याले में भर लीजिए। इसमें 5 पीली कौड़ियाँ डाल दीजिए। बारह दिन बाद इस रस को कौड़ी द्वारा छाजन, पामा, चम्बल आदि पर मलिए। इससे उसका नाम–निशान मिट जाएगा।

जलोदर (जलन्धर रोग) – ताजा करेले को कूटकर रस निकालें। यह पानी प्रतिदिन 50 ग्राम लेकर रोगी को पिलाएँ। बहुत कड़वा होगा, परन्तु जल्दी ही रोग को जड़ से उखाड़ देगा।

जुकाम – लौंग 7 नग (अदद) लीजिए। इन्हें 120 ग्राम जल में उबालिए। जब जल 30 ग्राम शेष रह जाए तो उतार–कर छान लीजिए। इससे जब भाप उठ रही हो तो उसका अपारा (बफारा) नाक को दीजिए। जब यह काढ़ा शीतल हो जाय तो पी लीजिए।

जुकाम (पुराना या बिगड़ा हुआ) – काली मिर्च 3 ग्राम, गुड़ 25 ग्राम और गौ का दही 50 ग्राम ले लें। काली मिर्च को खूब बारीक पीसकर तीनों चीजों को अच्छी तरह मिला लें। प्रातःसांय एक–एक ग्राम लेकर सेवन करें।

– संकलित

IITians HUB

Hub of Advanced Coaching

(ONLY IITIAN FACULTIES)

TARGET
JEE MAINS, ADVANCED

XI, XII
CBSE / ICSE / STATE

Free Demo Classes
From 25th March Onwards

Admissions Open

Mr. GAURAV BARANWAL
Director and HOD Physics
B. Tech IIT Dhanbad
Ex. Tata Motor Limited
5yrs Teaching Exp.

FOR MORE DETAILS VISIT OUR CENTER

Center :
Below Dena Bank,
Saraidhela, Dhanbad
Contact : 8877589749, 7992217886

12/19